नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 399, नई दिल्ली, बुधवार 08 अप्रैल 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता की खुशी मनाना अच्छा है, पर उससे जरूरी है अपनी असफलता से सीख लेना।

03 स्त्री की कुण्डली में, सूर्य उसका पति है
06 बचपन की बुनियाद – मातृत्व के रीति-रिवाज
08 रसोई गैस की कालाबाजारी: 161 गैस सिलेंडर जब्त...

दिल्ली की सड़को पर वाहनों द्वारा उड़ते नियम, कौन जिम्मेदार ?

जनहित में परिवहन विशेष समाचार पत्र का दिल्ली सरकार और सभी संबंधित सरकारी विभागों के आला अधिकारी से सवाल ?

संजय कुमार बाठला

1. दिल्ली भारत देश की राजधानी
2. दिल्ली जिस की सड़को पर चलने वाले वाहनों के प्रति सर्वोच्च न्यायालय भारत द्वारा जारी सबसे अधिक दिशा निर्देश
3. दिल्ली जहां वाहनों के प्रति उच्च न्यायालय द्वारा स्वयं उठाए गए सबसे अधिक सु मोटो
4. दिल्ली जहां सड़को को जाम मुक्त, सुरक्षित और दुर्घटना मुक्त बनाए रखने के लिए कार्यरत सबसे अधिक सरकारी विभाग, कर्मचारी और अधिकारी

इतना सब होने के बाद भी

1. दिल्ली की सड़को का जाम दुनिया में प्रसिद्ध
2. सड़क दुर्घटनाओं की गिनती बड़े शहरों से अधिक
3. सड़को पर सुरक्षा के नाम पर जीरो
4. अनाधिकृत पार्किंग, (जनता एवं स्वयं सरकारी विभागों द्वारा)
5. सड़को पर चलन में उपलब्ध अनाधिकृत वाहन अन्य सभी राज्यों से अधिक
6. सड़को पर बिना चालक लाइसेंस के सार्वजनिक सवारी एवं परिवहन वाहन चलाने वालो की गिनती अन्य किसी भी राज्य से अधिक
7. बिना परमिट, बिना इंश्योरेंस, बिना फिटनेस (वाहन जांच प्रमाण पत्र), बिना प्रदूषण प्रमाण पत्र और बिना पंजीकरण के चलते वाहनों की गिनती अन्य किसी भी राज्य से अधिक
8. नकली नंबर, डुप्लीकेट नंबर लगाकर चलने वाले वाहनों की उपलब्धता

आखिर क्यों और कैसे ?, बड़ा महत्वपूर्ण सवाल पर जवाब देने के लिए नहीं है तैयार कोई भी सरकारी विभाग

दिल्ली के माननीय उपराज्यपाल, दिल्ली सरकार, मुख्य सचिव दिल्ली, दिल्ली परिवहन विभाग, दिल्ली यातायात पुलिस, दिल्ली पुलिस, दिल्ली नगर निगम, पीडब्लूडी, सीपीडब्लूडी और एनडीएमसी मुख्य रूप से दिल्ली में जनता को सड़को को जाम मुक्त, दुर्घटना मुक्त, सुरक्षित समयानुसार सार्वजनिक सवारी सेवा और सार्वजनिक वितरण सेवा प्रदान करवाने के लिए कार्यरत हैं।

इतने सरकारी विभागों के कार्यरत रहने के बाद दिल्ली की सड़को और पटरियों पर

1. अनाधिकृत कब्जा,
2. अनाधिकृत पार्किंग
3. अनाधिकृत वाहनों की उपलब्धता
4. बिना मान्य दस्तावेजों के वाहनों कि उपलब्धता

आखिर क्यों और कैसे ?

क्या इसी के आधार पर दिल्ली की जनता को सुरक्षित समयानुसार सार्वजनिक सेवा उपलब्ध हो सकती हैं ?

क्या इसी तरह दिल्ली में अगर वाहन प्रदूषण है तो उसे समाप्त किया जा सकता है ?

दिल्ली में टूरिस्ट ड्राइवरों के लिए विदेशी भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू होगा – पर्यटन को मिलेगा बड़ा बढ़ावा

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के एक प्रतिनिधिमंडल ने दिल्ली पर्यटन विभाग, दिल्ली सरकार की सचिव श्रीमती निहारिका राय जी से मुलाकात की। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल ने ड्राइवरों के लिए विदेशी भाषाओं के प्रशिक्षण एवं बेहतर व्यवहारिक कौशल विकसित करने के उद्देश्य से एक विस्तृत प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

एसोसिएशन ने अपने पत्र के माध्यम से यह मांग रखी कि पर्यटकों, विशेषकर विदेशी पर्यटकों के साथ बेहतर संवाद स्थापित करने हेतु ड्राइवरों को पेशेवर प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, जिससे दिल्ली में पर्यटन को और अधिक बढ़ावा मिल सके।

इस पर सकारात्मक रुख अपनाते हुए श्रीमती निहारिका राय जी ने आश्वासन दिया कि आगामी 9 मई से ड्राइवरों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया जाएगा। यह प्रशिक्षण 50 से 100 ड्राइवरों के समूहों में आयोजित किया जाएगा। प्रशिक्षण पूर्ण करने वाले ड्राइवरों को प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट) भी प्रदान किया जाएगा।

उन्होंने यह भी बताया कि भविष्य में जब भी दिल्ली या भारत में कोई बड़ा अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम या आयोजन होगा, तो विदेशी प्रतिनिधिमंडलों (डेलीगेशन) की सेवाओं के लिए उन्हीं ड्राइवरों को प्राथमिकता दी जाएगी, जिन्होंने यह प्रशिक्षण प्राप्त किया होगा और जिनके पास प्रमाणित सर्टिफिकेट होगा।

एसोसिएशन के अध्यक्ष ने इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि यह कदम दिल्ली और भारत के पर्यटन क्षेत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होगा। इससे न केवल ड्राइवरों की कार्यक्षमता और पेशेवर व्यवहार में सुधार होगा, बल्कि देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों को भी बेहतर अनुभव प्राप्त होगा।

उन्होंने आगे कहा कि इस पहल से दिल्ली में पर्यटन की संभावनाओं में उल्लेखनीय वृद्धि होगी और विदेशी तथा घरेलू दोनों प्रकार के पर्यटकों को इसका सीधा लाभ मिलेगा।

अध्यक्ष, दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन

14 अप्रैल को पीएम मोदी करेंगे दिल्ली-सहारनपुर-देहरादून एक्सप्रेसवे का उद्घाटन; 210 KM का सफर ढाई घंटे में होगा पूरा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 14 अप्रैल को देहरादून से 12 हजार करोड़ रुपये के दिल्ली–सहारनपुर–देहरादून एक्सप्रेसवे का उद्घाटन करेंगे। यह 210 किलोमीटर लंबा एक्सप्रेसवे दिल्ली से देहरादून की यात्रा को पांच घंटे से घटाकर ढाई घंटे कर देगा। यह हाईवे भीषण जाम से राहत देगा और क्षेत्र में विकास को गति प्रदान करेगा।

नई दिल्ली। 12 हजार करोड़ रुपये की लागत से तैयार हुए दिल्ली सहारनपुर देहरादून एक्सप्रेसवे का उद्घाटन पीएम नरेन्द्र मोदी 14 अप्रैल को देहरादून से करेंगे। पांच घंटे का सफर वाहन चालक सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से ढाई घंटे में पूरा कर सकेंगे।

दिल्ली से देहरादून पहुंचना पहले से भी और आसान हो जाएगा। दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता, केंद्रीय राज्यमंत्री हर्ष मल्होत्रा और उत्तर पूर्वी दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी कार्यक्रम की कमान संभालेंगे। पिछले चार माह से हाईवे पर वाहनों से ट्रायल हो रहा था, जो पूरा हो चुका है।

सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि पीएम मोदी विकास का जो वादा करते हैं वह पूरा करते हैं। यह हाईवे दिल्ली, उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड के लिए बड़ी उपलब्धि है। हाईवे बनने से वाहन चालकों को भीषण जाम से निजात मिलेगी। खजूरी चौक पर लगने वाला जाम हाईवे की वजह से खत्म हो गया है।

उन्होंने बताया कि पीएम देहरादून से उद्घाटन करेंगे। उत्तर प्रदेश के सीएम बागपत में रहेंगे और दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता गीता कालोनी में कार्यक्रम में रहेंगी। दोनों जगह पीएम का कार्यक्रम का सीधा प्रसारण सुना जाएगा।

दिल्ली सहारनपुर देहरादून राजमार्ग

कुल लंबाई : 210 किलोमीटर

दिल्ली से देहरादून पहुंचने का समय : ढाई घंटे

वाहनों की रफ्तार : 100 प्रतिघंटा

कुल लागत : 12 हजार करोड़ रुपये।

लेन : छह

इंटरचेंज : सात

रेलवे ओवरब्रिज : दो

पुल : दस

तीन चरणों में बना है एक्सप्रेसवे

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे का पहला चरण अक्षरधाम से बागपत

दूसरा चरण बागपत से सहारनपुर तक है

तीसरा चरण है सहारनपुर से देहरादून तक

एशिया का सबसे लंबा एलिवेटेड कॉरिडोर

इस एक्सप्रेसवे पर एशिया का सबसे लंबा 12 किलोमीटर का एलिवेटेड कॉरिडोर है। यह कारिडोर राजाजी नेशनल पार्क से होकर गुजरेगा।

देहरादून के पास 340 मीटर लंबी ढाटकाली सुरंग बनाई गई है।

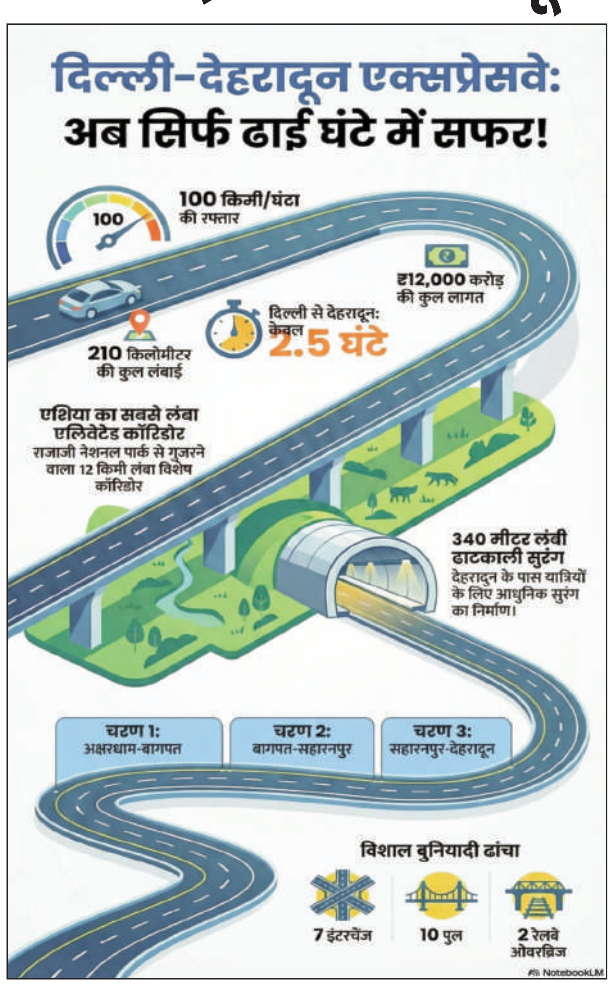

₹300 करोड़ से ज़्यादा के इन्वेस्टमेंट फ्रॉड के पीछे एक ऑर्गनाइज़्ड साइबर सिंडिकेट था

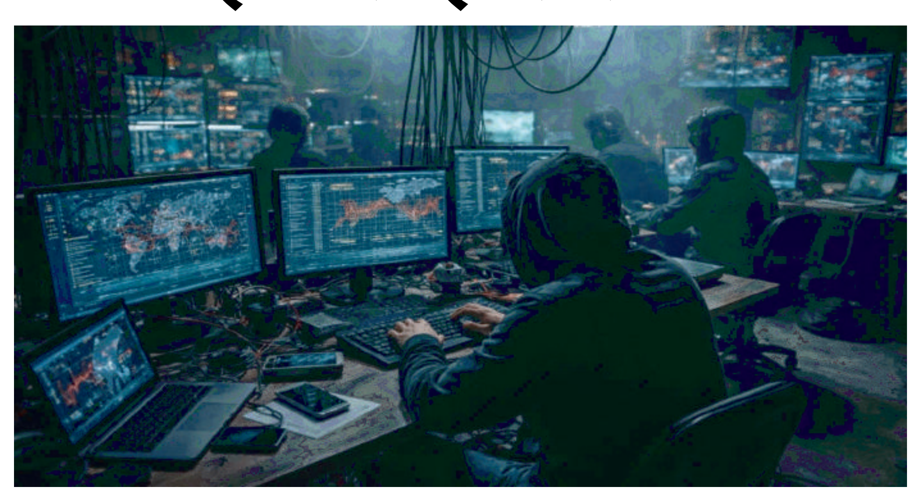

पिंकी कुंडू

दिल्ली पुलिस क्राइम ब्रांच ने एक बड़े ऑपरेशन में इस नेटवर्क का भंडाफोड़ किया और मास्टरमाइंड समेत कई आरोपियों को गिरफ्तार किया।

विक्टिम्स को WhatsApp ग्रुप्स के ज़रिए फेक इन्वेस्टमेंट स्कीम्स में फंसाया गया, फेक ट्रेडिंग ऐप्स इंस्टॉल किए गए, और कई बैंक अकाउंट्स के ज़रिए पैसे निकाले गए।

जब पैसे निकालने का समय आया—ऐप बंद हो गया, ग्रुप गायब हो गया, और पैसे भी।

इन्वेस्टिगेशन में पता चला:

* 260+ बैंक अकाउंट्स और 100+ शेल कंपनियों का इस्तेमाल
* NCRP से जुड़ी 2,500+ शिकायतें
* इंटरनेशनल साइबर फ्रॉड नेटवर्क्स से कनेक्शन
* क्रिप्टोकरेंसी चैनल्स के ज़रिए फंड मूवमेंट

यह सिर्फ़ एक स्कैम नहीं है, बल्कि एक अच्छी तरह से बना हुआ साइबरक्राइम इकोसिस्टम है।

याद रखें:

* ज़्यादा रिटर्न का लालच अक्सर फ्रॉड का पहला संकेत होता है।
* अनजान ऐप्स, WhatsApp इन्वेस्टमेंट ग्रुप्स और अनवेरिफाइड प्लेटफॉर्म्स से दूर रहें। इन्वेस्ट करने से पहले वेरिफ़ाई करें, वरना नुकसान पक्का है।

अगर आप साइबर फ्रॉड का शिकार हो जाते हैं: 1930 पर कॉल करें या cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html ।
tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : चार धाम यात्रा की प्लानिंग कर रहे हैं? फेक बुकिंग स्कैम से सावधान रहें

पिंकी कुंडू

चार धाम यात्रा के दौरान

फेक हेलीकॉप्टर बुकिंग और होटल बुकिंग स्कैम तेज़ी से बढ़ रहे हैं।

स्कैमर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन, होटल और हेलीकॉप्टर बुकिंग की आड़ में फेक वेबसाइट और ऐड के ज़रिए लोगों को टारगेट करते हैं।

चार धाम यात्रा स्कैमर आपको कैसे फंसाते हैं ?

फेक वेबसाइट और ऐड Google सर्च या सोशल मीडिया पर दिखाए जाते हैं।

ये वेबसाइट ऑफिशियल और भरोसेमंद लगती हैं।

फेक एजेंट आपसे फ़ोन या WhatsApp के ज़रिए कॉन्टैक्ट करते हैं।

"लिमिटेड सीट," "VIP बुकिंग," या "अर्जेंट अवेलेबिलिटी" के वादे करके प्रेशर बनाया जाता है।

इसके बाद क्या होता है ?

आपसे आपका आधार, ट्रैवल डिटेल और पर्सनल जानकारी मांगी जाती है।

आपसे QR कोड या UPI ID का इस्तेमाल करके पेमेंट करने के लिए कहा जाता है।

पेमेंट के बाद, न तो बुकिंग कन्फर्म होती है, न ही कोई सर्विस दी जाती है, और न ही फेक बुकिंग डिटेल शेयर की जाती हैं।

अपनी यात्रा को सुरक्षित रखने के लिए, याद रखें:

* सिर्फ़ सरकारी वेबसाइट या ऑथराइज़्ड प्लेटफ़ॉर्म से ही बुक करें।
* हमेशा वेबसाइट URL पर ".gov.in" चेक करें।
* सोशल मीडिया ऐड या अनजान लिंक पर भरोसा न करें।
* Google सर्च पर पहला रिज़ल्ट हमेशा असली नहीं होता।
* बिना वेरिफ़िकेशन के किसी भी एजेंट को पेमेंट न करें।

अगर आप धोखाधड़ी का शिकार हो जाते हैं, तो तुरंत 1930 पर कॉल करें या cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें।

चार धाम यात्रा की प्लानिंग कर रहे हैं ?

तो ऑनलाइन बुकिंग स्कैम से सावधान रहना बहुत ज़रूरी है। आजकल, पूरी यात्रा डिजिटल हो गई है, जिसमें रजिस्ट्रेशन, होटल और हेलीकॉप्टर बुकिंग सब ऑनलाइन हो रहे हैं। स्कैमर इसका फ़ायदा उठाकर नकली वेबसाइट, ऐड और एजेंट के ज़रिए लोगों को टारगेट कर रहे हैं।

स्कैम का तरीका:

* नकली वेबसाइट जो बिल्कुल ऑफिशियल पोर्टल जैसी दिखती हैं
* सोशल मीडिया और गूगल ऐड में सबसे ऊपर दिखना
* "ऑथराइज़्ड एजेंटर बनकर WhatsApp/कॉल पर संपर्क करना
* नकली ID कार्ड बनाना और अर्जेंसी ("लास्ट स्लॉट", "लिमिटेड सीट") बताना
* UPI, QR कोड या बैंक ट्रांसफर से पेमेंट लेना

ध्यान दें:

* सिर्फ़ वेरिफाइड ऑफिशियल वेबसाइट से ही बुक करें https://www.heliyatra.irctc.co.in/
* गूगल पर सबसे ऊपर का रिज़ल्ट हमेशा ऑफिशियल नहीं होता
* सोशल मीडिया ऐड पर आँख बंद करके भरोसा न करें
* अनजान एजेंट को बिना वेरिफाई किए पेमेंट न करें
* UPI ID या QR कोड का इस्तेमाल करके एडवांस पेमेंट करने से बचें

थोड़ी सी सावधानी आपकी पूरी ट्रिप को सुरक्षित बना सकती है।

अगर आप साइबर फ्रॉड का शिकार हो जाते हैं:

* 1930 पर कॉल करें
* cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें।

कमर और पीठ दर्द होने पर इन नुस्खों को अजमाएं

कमर और पीठ दर्द एक आम समस्या है जो कई लोगों को प्रभावित करती है।

यहाँ कुछ प्रभावी नुस्खे दिए गए हैं जो कमर और पीठ दर्द को कम करने में मदद कर सकते हैं:

◆ कमर दर्द के लिए नुस्खे

1. ❖ धतूरे के पत्तों का रस

- 400 ग्राम धतूरे के पत्तों का रस, 10 ग्राम अफीम और 3 ग्राम सेंधा नमक।
- इन तीनों चीजों को एक साथ मिलाकर गाढ़ा गाढ़ा कर लें।
- दिन में तीन चार बार इसकी मालिश करने से कमर दर्द में बहुत आराम मिलता है।

2. ❖ कमल ककड़ी का चूर्ण

- कमल ककड़ी के चूर्ण को दूध में उबालकर पीने से भयंकर से भयंकर दर्द में भी आराम मिलता है।
- यह एक प्रभावी आयुर्वेदिक नुस्खा है जो कमर दर्द को कम करने में मदद करता है।

3. ❖ सोंठ और गोखरू

- सोंठ और गोखरू बराबर मात्रा में लेकर उसका क्वाथ बनाकर सुबह शाम पीने से कमर दर्द में आराम मिलता है।
- यह एक प्राकृतिक दर्द निवारक है जो कमर दर्द को कम करने में मदद करता है।

4. ❖ सोंठ व अरंड मूल

- सोंठ व अरंड मूल का क्वाथ बनाकर उसमें पिसी हुई हींग और काला नमक मिलाकर पीने से आराम मिलता है।
- यह एक प्रभावी आयुर्वेदिक नुस्खा है जो कमर दर्द को कम करने में मदद करता है।

5. ❖ अजवायन का चूर्ण

- सौ ग्राम अजवायन का चूर्ण और सौ ग्राम गुड़ एक साथ मिलाकर किसी डिब्बे में रख लें और 5 – 5 ग्राम सुबह शाम खाएं।
- इससे कमर दर्द में आराम मिलता है तथा दर्द भी दूर हो जाता है।

6. ❖ खजूर और मेथी

- पांच ग्राम खजूर को उबालकर उसमें 2 ग्राम मेथी का चूर्ण डालकर रोज पीने से कमर दर्द में राहत मिलती है।
- यह एक प्राकृतिक दर्द निवारक है जो कमर दर्द को कम करने में मदद करता है।

◆ पीठ दर्द के लिए नुस्खे

1. ❖ तिल, सोंठ और गुड़

- बीस ग्राम तिल, तीन ग्राम सोंठ व चालीस ग्राम गुड़ को एक साथ मिलाकर पीस लें।
- फिर इसे दूध में मिलाकर दिन में तीन चार बार चाटने से पीठ दर्द ठीक हो जाता है।

2. ❖ नीम की कोंपल

- नीम की कोंपल या नरम पत्तियों को तोड़कर काढ़ा बनाएं।
- फिर साफ कपड़ा हल्के गर्म काढ़े में भिगोकर दर्द वाले स्थन को सेंकें।
- इससे पीठ दर्द में आराम मिलता है।

▪ कोई भी उपचार अपनाने से पहले अपने आयुर्वेदिक चिकित्सक या विशेषज्ञ से परामर्श (सलाह) करना अत्यधिक अनुशंसित (जरूरी) है।

▪ सभी सुखी और निरोगी रहे

वर्ल्ड हेल्थ डे

पिंकी कुंडू

आज वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइज़ेशन (WHO) का स्थापना दिवस है। इस ऑर्गनाइज़ेशन की स्थापना 7 अप्रैल, 1948 को जिनेवा में हुई थी और तब से इस दिन को वर्ल्ड हेल्थ डे के तौर पर मनाया जाता है।

हेल्थ ही असली दौलत है! आज की बिज़ी ज़िंदगी में, हम अपनी हेल्थ को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। तो चलिए इस मौके पर कुछ आसान लेकिन ज़रूरी बातें याद रखते हैं

1. हमेशा ताज़ा और घर का बना खाना खाएं
2. हो सके तो ऑर्गेनिक खाना चुनें
3. पैकेजिंग पर एक्सपायरी डेट देखे बिना कुछ भी न खरीदें
4. हमेशा अच्छी क्वालिटी की मिठाई खरीदें
5. चाइनीज़ खाने में अजीनोमोटो से बचें

6. सब्ज़ियां और फल नैचुरल और ताज़े खरीदें (ज़्यादा बड़े/चमकदार वाले न खरीदें)
7. अगर मिलावट का शक हो तो रिपोर्ट करें

सिर्फ़ खाना ही नहीं, आदतें भी ज़रूरी हैं!

1. रोज़ एक्सरसाइज़ करें
2. योग और प्राणायाम करें
3. साफ़-सफ़ाई बनाए रखें (शरीर + घर + आस-पास)
4. मेंटल हेल्थ बनाए रखें (टेंशन कम रखें)

हेल्थ ही सफलता की चाबी है!

विश्व स्वास्थ्य दिवस (World Health Day)

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) हर साल 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाता है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक स्वास्थ्य का मतलब सिर्फ स्वस्थ खाना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि कैसे दुनिया एक साथ आकर सभी को लंबा और स्वस्थ जीवन जीने में मदद कर सकती है। चिकित्सा के क्षेत्र में नए खोज, नई दवाओं और नए टीकों को बनाने के साथ ही स्वास्थ्य के मुद्दों के बारे में लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाना भी विश्व स्वास्थ्य संगठन की प्राथमिकता है।

›› विश्व स्वास्थ्य दिवस का इतिहास ‹‹

विश्व स्वास्थ्य दिवस की शुरुआत WHO की नींव रखने के दिन के रूप में की गई थी। साल 1948 में, दुनिया के तमाम देशों ने एक साथ मिलकर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने, दुनिया को सुरक्षित रखने और कमजोर लोगों की सेवा करने के लिए WHO की स्थापना की, ताकि हर व्यक्ति हर जगह स्वस्थ्य रहे और उच्चतम स्तर की मदद प्राप्त कर सके। इसके दो साल बाद 1950 में पहला विश्व स्वास्थ्य दिवस 7 अप्रैल को मनाया गया और तब से यह हर साल इसी दिन मनाया जाता है।

›› विश्व स्वास्थ्य दिवस के उद्देश्य ‹‹

* सार्वजनिक स्वास्थ्य में विज्ञान की भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
* साक्ष्य आधारित नीति निर्माण को बढ़ावा देना।
* विभिन्न देशों और क्षेत्रों में वैज्ञानिक सहयोग को मजबूत करना।
* लोगों, जानवरों, पौधों और पर्यावरण के बीच 'एक स्वास्थ्य' संबंध को उजागर करना।

सीनियर सिटिज़न वीक की शुभकामनाएँ!

केके छाबड़ा

आपको क्या कम करना चाहिए?

1. नमक
2. चीनी
3. मैदा
4. डेयरी प्रोडक्ट्स
5. प्रोसेस्ड फ़ूड
6. बहस
7. बेवजह के झगड़े

आपको क्या खाना चाहिए?

1. सब्ज़ियाँ
2. दालें
3. मूंगफली/फलियाँ
4. ड्राई फ्रूट्स
5. कोल्ड-प्रेस्ड ऑयल (ऑलिव, नारियल)
6. फल
7. कुदरत की कोई भी कड़वी चीज़
8. अपने दुखों को निगलकर आगे बढ़ें

इन चीज़ों को भूलने की कोशिश करें:-

1. आपकी उम्र
2. आपका अतीत
3. आपकी शिकायतें
4. रिश्तेदारों से मिली तकलीफ़

इनका खास ध्यान रखें:-

1. आपका परिवार
2. आपके दोस्त
3. आपके अच्छे विचार
4. एक साफ़ और खुशहाल घर
5. आने वाले मुश्किल समय के लिए काफ़ी पैसे बचाना

ये आदतें अपनाएँ:-

1. हमेशा मुस्कुराते रहें
2. रेगुलर एक्सरसाइज़ करें
3. अपना वज़न बनाए रखें
4. भले ही आपकी ज़बान मीठी न हो, लेकिन मीठा बोलना सीखें
5. दूसरों की बात सुनने की आदत डालें

लाइफ़स्टाइल की छह आदतें जिन्हें आपको अपनाना चाहिए:-

1. प्यास लगने का इंतज़ार न करें — रेगुलर पानी पिएँ
2. थकने का इंतज़ार न करें — समय पर आराम करें
3. बीमार पड़ने का इंतज़ार मत करिए — रेगुलर चेक-अप करवाएं
4. चमत्कार का इंतज़ार मत करिए
5. खुद पर विश्वास रखिए
6. हमेशा पॉज़िटिव रहो और अच्छे भविष्य के बारे में सोचिए
7. एक ही जगह पर ज़्यादा देर तक मत बैठिए

क्या आपके 60 से 90 साल के दोस्त हैं? तो उन्हें यह मैसेज ज़रूर भेजिए!

"हैप्पी सीनियर सिटिज़न्स वीक! सभी को हेल्दी और खुशियों भरी ज़िंदगी की शुभकामनाएँ!" 🙏

*********** ***अपने परिवार के बुज़ुर्गों को और अपने बुज़ुर्ग मित्रों को जरूर भेजें***

शीतली प्राणायाम

गर्मी में शरीर को शान्त करने वाला आयुर्वेदिक उपाय

क्या शरीर में अधिक गर्मी, चिड़चिड़ापन, पसीना या जलन रहती है?

गर्मी के दिनों में एक सरल प्राणायाम शरीर और मन दोनों को शान्त कर सकता है।

शीतली प्राणायाम क्या है?

शीतली प्राणायाम एक ऐसा श्वास-अभ्यास है जिसमें जीभ को मोड़कर उसके द्वारा श्वास भीतर ली जाती है। आयुर्वेद और योग में इसे शरीर की अतिरिक्त उष्णता को कम करने वाला माना गया है।

विशेषत: जब:

बहुत गर्मी लगती हो

शरीर में पित्त बढ़ा हुआ लगे

मुंह सूखता हो

चिड़चिड़ापन या बेचैनी हो

1. सीधा बैठें और शरीर को शान्त रखें।
2. जीभ को बाहर निकालकर नली की तरह मोड़ें।
3. उसी मोड़ी हुई जीभ से धीरे-धीरे श्वास भीतर लें।
4. अब जीभ भीतर करें और मुंह बंद कर लें।
5. नाक से धीरे-धीरे श्वास बाहर छोड़ें।
6. ऐसा 7-10 बार करें।

यदि जीभ न मोड़ सकें, तो दांतों के बीच से श्वास लेने वाला ?सीतकारी प्राणायाम? किया जा सकता है।

गर्मी में इसके लाभ

शीतली प्राणायाम को नियमित करने से:

शरीर की अधिक गर्मी कम हो सकती है

चेहरे और आंखों की जलन में राहत मिल सकती है

अधिक प्यास और बेचैनी कम हो सकती है

क्रोध, चिड़चिड़ापन और मानसिक गर्मी शान्त हो सकती है

गर्मियों में नींद और मन की स्थिरता बेहतर हो सकती है

यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए उपयोगी माना जाता है जिनमें पित्त प्रकृति अधिक होती है।

आयुर्वेदिक दृष्टि से

आयुर्वेद में गर्मी, जलन, अधिक पसीना, चेहरे पर लालिमा, अम्लता, क्रोध और बेचैनी को अक्सर बढ़े हुए पित्त से जोड़ा जाता है। शीतली प्राणायाम को पित्त को शान्त करने वाले अभ्यासों में माना गया है।

इसी कारण इसे:

गर्मी के मौसम में

दोपहर के समय के बाद

अधिक मानसिक तनाव या गर्मी के बाद किया जाता है।

वैज्ञानिक दृष्टि से

आधुनिक अध्ययनों में पाया गया है कि धीमी और गहरी श्वास लेने वाले अभ्यास:

हृदय की गति को कम कर सकते हैं

शरीर की तनाव प्रतिक्रिया को शान्त कर सकते हैं

Parasympathetic Nervous System को सक्रिय कर सकते हैं

मन को अधिक शान्त और स्थिर बना सकते हैं

जब शीतली प्राणायाम में ठंडी हवा मुंह से भीतर जाती है, तो कई लोगों को तुरंत शीतलता और आराम का अनुभव होता है।

किन लोगों को सावधानी रखनी चाहिए?

इन परिस्थितियों में इसे बहुत अधिक न करें:

यदि बहुत अधिक सर्दी या कफ हो

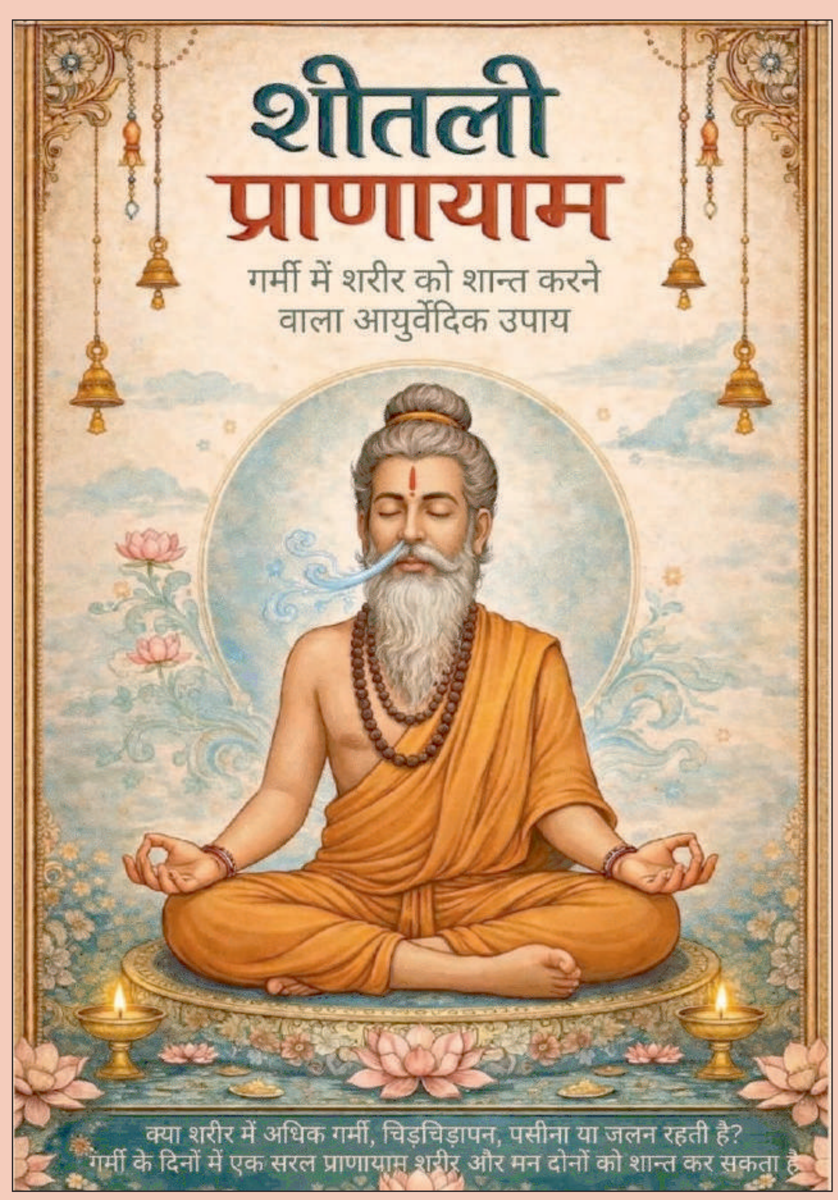

गला खराब हो

सर्द मौसम हो

बहुत निम्न रक्तचाप हो

अस्थमा या श्वास की समस्या में बिना विशेषज्ञ सलाह के सुबह बहुत ठंडे मौसम में करने की बजाय गर्मी या सामान्य मौसम में करना अधिक उपयुक्त माना जाता है।

कभी-कभी शरीर को शान्त करने के लिए किसी औषधि की नहीं, सही श्वास की आवश्यकता होती है।

इस गर्मी में प्रतिदिन केवल 2-3 मिनट शीतली प्राणायाम करके देखें।

स्त्री की कुण्डली में, सूर्य उसका पति है....

चन्द्रमा वह स्वयं है, मंगल धन है, बुध पुत्र है, गुरु सुख है, शुक्र धर्म है, शनि घर है। विवाह से पूर्व इसका विचार करना चाहिये। वार-तिथि-नक्षत्र तथा ग्रह-भाव के योग से विषांगना योग बनता है। क्रूरवार, भद्रातिथि तथा शतभिषा, आश्लेषा, कृत्तिका के योग से स्त्री जातक विष सदृश होता है।

"सूर्यभौमार्किवारेषु भद्रातिथि शताभिषे (विशाखे च)

आश्लेषा कृत्तिका चेत्स्यात्तत्र जाता विषांगना ॥"

(ज्योतिष तत्व)

क्रूरवार = रवि, मंगल, शनि ।

√•भद्रातिथि =द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी।

√•शतभिषा = राहु का नक्षत्र, आश्लेषा = बुध का नक्षत्र कृत्तिका = सूर्य का नक्षत्र, विशाखा गुरू का नक्षत्र ।

√• विषांगना का फल है-गुरु = सुख का नाश, बुध पुत्र का नाश, सूर्य पति का नाश ।】

√ • द्वितीय (कुटुम्ब), सप्तम (पति), द्वादश (भोगशय्या) भावों में यदि सूर्य, मंगल, शनि हों तो सास ससुर पति धन सबका नाश होता है। यह भी विषांगना योग है।

√• 【(सूर्य, मंगल, शनि) वार + (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथि + (शतभिषा, आश्लेषा, कृत्तिका) नक्षत्र + (२, ७, १२) भाव क्रूराक्रान्त विषांगना योग।】

√ • 【त्रिकोण स्थानों (१, ५, ९) में क्रूर ग्रहों के योग से भी विषांगना जानना चाहिये। अल्पवय में विवाह होने पर कंन्या बाल विधवा होती है।】

√ • प्रौढ वय में वा विलम्ब से विवाह होने पर वैधव्य नहीं होता किन्तु अनपत्यता होती है। जीवन दुःखमय होता है। विषांगना दोष के परिहार के लिये कंन्या को सावित्री व्रत करना चाहिये। पीपल आदि से विवाह करके चिरायु वर के साथ विवाह करें। कहा है...

"सावित्र्यादिवतं कृत्वा वैधव्यविनिवृत्तये
अश्वत्थादिभिरुद्वाह्य दद्यात्तां चिरजीविने ॥"

(ज्योतिष तत्व)

√•ऐसी कंन्या के विवाह की लग्न ऐसी हो जिससे कुयोगों का नाश होकर शुभ का उदय हो। विवाह शुक्र के बली होने पर कन्या को सास का सुख, सूर्य से ससुर का सुख, गुरू एवं सप्तमेश से पति काल में का सुख, लग्न से शारीरिक सुख तथा सोम से कंन्या के मन को प्रसन्नता का विचार करना चाहिये। इनका शुभ प्रभावी होना लग्न की निर्दोषता पर निर्भर करता है। ज्योतिषी द्वारा सुझाया गया उपाय भी दैव के सम्मुख निरस्त हो जाता है। इससे संबंधित एक आख्यान सुनाता हूँ।

√•भास्कराचार्य नाम के एक महान्ज्योतिषी थे। उनकी कन्या विषांगना योग से युक्त थी। उन्होंने उसके वैधव्य दोष के निवारण हेतु शुद्ध लग्न निकाला। इस लग्न में विवाह का होना निश्चित किया गया। इसके लिये एक जलयंत्र समय ज्ञान के लिये स्थापित किया गया। इसी बीच विवाह के दिन उनकी कंन्या कौतूहलवश उस यंत्र के पास गयी और उस पात्र में झाँकने लगी, जिससे जल बूंद-बूंद कर टपक रहा था। उसके नाक का मोती उस जल में गिर पड़ा। फलस्वरूप पानी के गिरने की गति मंद हो गई। शुद्ध लग्न का समय निकल गया। अशुद्ध लग्न में विवाह हुआ। कंन्या विधवा हुई और स्वयं मरी भास्कराचार्य ने कन्या की स्मृति में उसके नाम पर 'लीलावती' नामक ज्योतिष का ग्रन्थ लिखा। यद्यपि दैव बलवान है, प्रयत्न / उपाय करना मनुष्य की नियति है।

√• वैवाहिक लग्न की प्रबलता का बड़ा महत्व है। निर्दोष लग्न में हुआ विवाह सब प्रकार के अशुभ प्रभाव का नाश कर दाम्पत्य जीवन में सुख का प्रकाश विखेरता है।

√•विवाह इन्द्रिय भोग के लिये नहीं, वंश परम्परा को आगे बढ़ाने के लिये किया जाता है। इस विस्तार प्रक्रिया में पुरुष तीन बार जन्म लेता है।

√•१. पुरुष का पहला जन्म स्त्री (भार्या) के गर्भ में होता है। यहाँ वह ९ महीने रहता है और अपने विषय में चिन्तन करता है।

√• २. पुरुष का दूसरा जन्म गर्भ से बाहर आने पर होता है। यहाँ वह गर्भ के चिन्तन को बिल्कुल भूल जाता है और नया जीवन जीता है।

√• . पुरुष का तीसरा जन्म वर्तमान शरीर को छोड़कर अन्यत्र कर्मानुसार पुनः होता है।

√• ऐतरेयोपनिषद् में पुरुष के तीन जन्म लेने की विस्तृत चर्चा की गई है। ऋषि का कथन है...

"पुरुषे ह वा अयमादितो गर्भो भवति । यदेतद्वेतः तदेतत्सर्वेभ्यः अङ्गेभ्यस्तेजः सम्भूतमात्मन्येवात्मानं विभर्ति । तदादा खियाँ सित्यथैनज्जयति तदस्य प्रथमं जन्म ।"

(ऐतरेय उप. २ ।१)

√• 【पुरुषे =पुरुष शरीर में, ह = निश्चयपूर्वक, वा (वै) = ही, अयम्= यह (संसारी जीव), गर्भः = वीर्य रूप में स्थित, भवति होता है। यत्जो, एतत्= यह, रेतः = वीर्य है, तत्= वह, एतत्= यह (वीर्य), सर्वेभ्यः सम्पूर्ण, अंगेभ्यः अंगों से (निकल कर), तेजः = तेज (शक्ति) है, सम्भूतम् इकट्ठा (उत्पन्न) हुआ, आत्मानम्अपने आप को, अपने स्वरूप को, विभर्ति = धारण (पोषण) करता है, आत्मनि = अपने (शरीर) में। तद् = तो उसको, यदा जब, स्त्रियाम्= स्त्री (योनि) के अन्दर, सिञ्चति सींचता (डालता) है, तद् = वह, अस्य = इस (पुरुष) का, प्रथमम्= पहला, जन्म जन्म (है)।

"ततस्त्रिया आत्मभूतं (य) गच्छति ।
यथा स्वमंगं तथा ।
तस्मादेनां न हिनस्ति सास्यैतमात्मानमत्र गतं भावयति।"

(ऐतरेय उप. २ ।२)

√• तत्= वह (सिंचित वीर्य), स्त्रियाः= स्त्री के ,आत्मभूयम्/ आत्मभूतम्= आत्म्भाव (अपनत्व) को, गच्छति । = प्राप्त हो जाता है। यथा= जैसे, स्वम् = अपना, अंगम्= अंग होता है, तथा वैसे। तस्मांत्= उस कारण से ही, एनाम्= इस (स्त्री) को न नहीं, हिनस्ति = मारता, हानि पहुँचाता है। सा वह (स्त्री), अस्य = इस (पुरुष) के एतत्= इस आत्मानम्= स्वरूप (गर्भ रूप वीर्य) को, अत्र = यहाँ (अपने शरीर में), गतम्= आये हुए को, भावयति पालन करती है।

"-सा भावयित्री भायितव्या भवति ।
तं खी गर्म बिभर्ति । सोऽय एवं कुमारं जन्मोऽग्रेऽधिभावयति । स यत्कुमारं जन्मनोऽग्रेऽधिभावयत्यात्मानमेव तद्भावयत्येषां लोकानां सन्तत्या एवं सन्तता हीमे लोकास्तदस्य द्वितीयं जन्म।"

(ऐतरेय उप. २ ।)

√• 【सा = वह, भावयित्री = (पुरुष के तेज रूप गर्भ का) पालन करने वाली स्त्री, भावयितव्या= (पुरुष द्वारा) पालन करने योग्य, भवति= होती है। तम्= उस (पुरुष) को, स्त्री =स्त्री, गर्भम्-गर्भ को (में), विभर्ति पालन पोषण करती है। सः = वह (पुरुष), अग्रे =(जन्म से पहले, एव-ही, कुमारम्= (उत्पन्न) शिशु को, जन्मनः = जन्म से (के बाद), अग्रे आगे, बाद में, अधिभावयति = संस्कारों द्वारा पुष्ट करता है। सः = वह (पुरुष), यत् = जो, कुमारम्= जातक को, जन्मनः अग्रे अधि- भावयति जन्म के अनन्तर अभ्युदयशील बनाता है, आत्मानम्एव = (वास्तव में वह अपने आप की ही, तत्= तो, भावयति = पालना करता है, एषाम्=इन , लोकानाम्= लोकों (मनुष्यों) की, संतत्या = बढ़ाने के द्वारा [संतत्या संतत्यै बढ़ाने के लिये, विस्तार के लिये, नष्ट न होने देने के लिये।]】

√ • एवम्= इस प्रकार, संतता विस्तार को प्राप्त हुए विस्तृत, हि = क्योंकि, इमे=ये सब, लोकाः =लोक (मनुष्य समाज), तत्= वह, अस्य = इस (पुरुष / जीवात्मा) का, द्वितीयम्दूसरा जन्म जन्म (होता है)।

"सोऽस्यायमात्मा पुण्येभ्यः प्रतिधीयते ।
अथास्यायमितर आत्मा कृतकृत्यो वयोगतः प्रैति।
स इतः प्रयन्नेव पुनर्जायते तदस्य तृतीयं जन्म।"

(ऐतरेय उप. २ ।४)

√•सः = वह (पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ जातक), अस्य = इस (पिता) का अयम्यह, आत्मा = स्वरूप, पुण्येभ्यः = शुभ कर्मों के लिये, प्रतिधीयते = स्थापित किया जाता है, प्रतिनिधि (आगे सम्हालने वाला) बनाया जाता है। अथ = और उसके बाद, अस्य = इस (पुत्र) का, अयम्= यह (पिता रूप पुरुष), इतर = दूसरा, आत्मा = शरीर, कृतकृत्यः = सफल, अपना कर्तव्य पूरा करके, वयोगतः= अवस्था बीत ही, पुनः जाने पर, वृद्ध होने पर, प्र- एति =(यहाँ से) मर कर चला जाता है। सः = वह, इतः = यहाँ से, इस मनुष्य = लोक से, प्रयन्= जाता हुआ, शरीर को छोड़ता हुआ, एवं = पैदा होता है। तद् फिर, जायते = जन्म लेता है, वह, अस्य = इस पुरुष का, तृतीयम्तीसरा, जन्म = जन्म (है)।

√•वामदेव ऋषि ने इसका कथन किया है। गर्भ वास्तव में पहले स्वयं पुरुष धारण करता है। पुरुष के अंग-अंग में व्याप्त तेज का सार यह वीर्य है। इस तेज रूप वीर्य को पुष्ट करना, सम्हालना ही वीर्यरूप गर्भ को धारण करना है। पुरुष जब इस वीर्य को अपने शिश्न द्वार से निकालता है और इसे स्त्री की योनि मैं जाने देता है तो यह इसका प्रथम जन्म है। यदि यह स्त्री की योनि में न जाकर अन्यत्र / बाहर गिरता है. तो उसका यह प्रथम जन्म नष्ट / व्यर्थ समझना चाहिये।

√•पुरुष का वीर्य उसका ही स्वरूप है। इस वीर्य के द्वारा स्त्री की योनि को सींचना / गर्भाधान करना, इसका जन्मना है। गर्भाधान क्रिया में पुरुष अपने को उत्पन्न करता है। स्त्री के गर्भाशय में इस वीर्य की प्रविष्टि गर्भाधानकर्ता का प्रथम जन्म है। पुरुष के शरीर से निकला हुआ रेत स्त्री के शरीर में जाकर आत्मवत्हो जाता है, ठीक ऐसे ही जैसे उसका अपना अंग। अब वह विजातीय द्रव्य नहीं रहता। विजातीय द्रव्य को शरीर स्वीकार नहीं करता, उसे सदा ही निकालने का प्रयास करता रहता है। विजातीय द्रव्य उसे कष्ट देता है। वीर्य विजातीय द्रव्य होकर भी स्वी को कष्ट नहीं देता। वह इसे अपना प्राकृतिक भाग मान कर इसे स्वीकारती है और इसका पालन करती है। अतएव पुरुष का भी यह कर्तव्य होता है कि वह उस स्त्री. का पालन करे आप ही की तरह जैसे कि वह स्त्री उसके द्वारा स्थापित उसके ही स्वरूप उस गर्भ का पालन करती है। स्त्री का पालन करना अपना ही परिवर्धन करना है। स्त्री जब इस गर्भ को बाहर करती है तो यह पुरुष का दूसरा जन्म है। इस द्विजन्मा कुमार का पालन संस्करण दोनों पति-पत्नी मिलकर करते हैं। कुमार रूप में पुरुष का आत्मा उसके पुण्य कर्मों का प्रतीक बन कर संसार में रहता हुआ उसके कर्मों को आगे बढ़ाता है। पिता रूप पुरुष कृतकृत्य होकर अपने स्थूल शरीर को छोड़ देता है। इस लोक से जाते ही, वह फिर उत्पन्न होता है। यह उसका तीसरा जन्म है। यह तीसरा जन्म उसके प्रथम जन्म का हेतु बनता है। इससे सिद्ध होता है, यह पुरुष त्रिविक्रम है।

"तस्मै त्रिविक्रमविष्णवे नमः।"

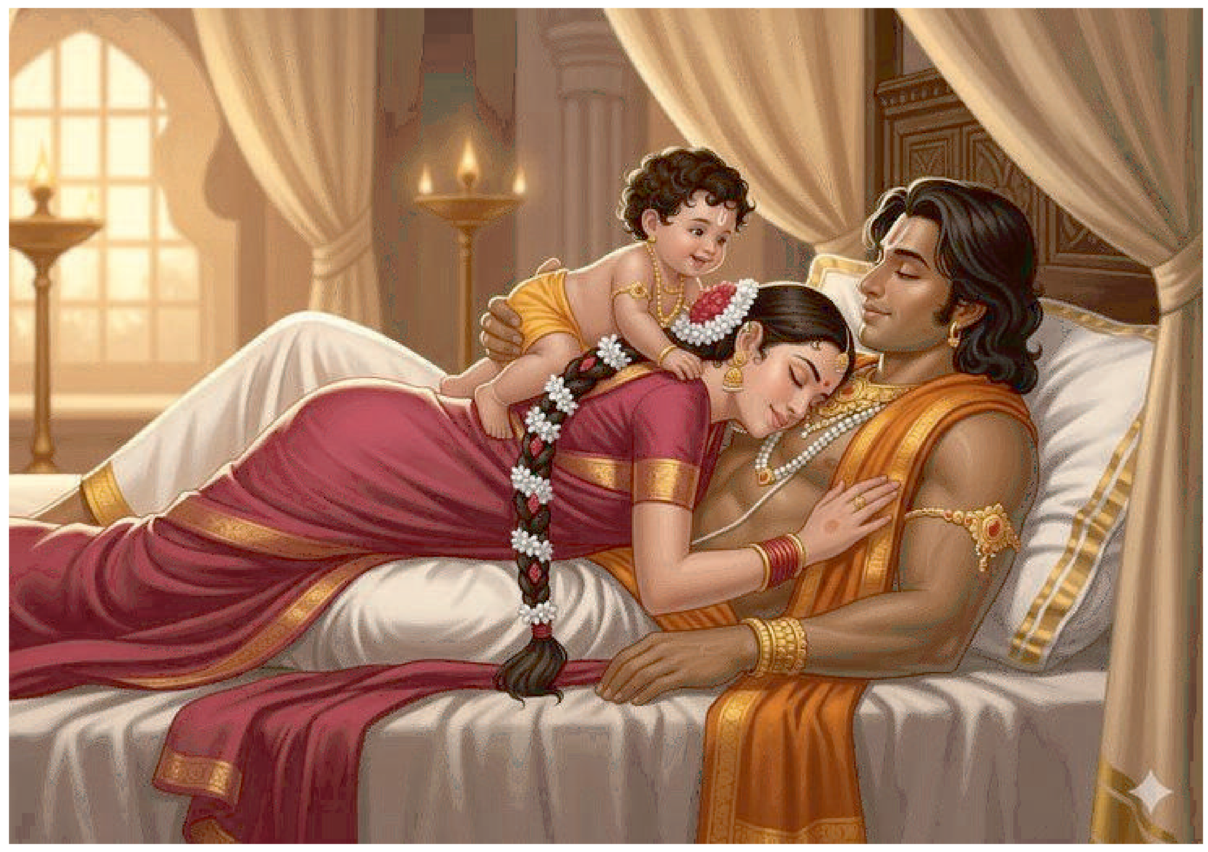

कर्मगति : बूढ़ी अम्मा का श्राप

आज सुबह जब मैं काम पर निकल रहा था, तभी घर में कुछ हल- चल सी हुई, जैसे कोई अनहोनी घटना घट गयी हो।

मेरे स्वर्गीय पिताजी के परम मित्र का बेटा राजेश भैया मेरे परिवार के साथ बैठे हुए थे और उनके माथे पर बल पड़े हुए थे।

पिछले अस्सी वर्षों से हमारे और राजेश भैया के परिवार के साथ पारिवारिक संबंध रहे हैं। इनके पास पीढ़ियों से ही अकूत धन संपदा रही है।

इनका मूल खानदानी व्यवसाय ब्याज पर धन देना था और इसके बदले में ये लोग मकान/दुकान/जेवर आदि गिरवी रखवा लिया करते थे। हमारे शहर में पिछले बीस वर्षों से ये सिविल कॉन्ट्रेक्टर (ठेकेदार) थे।

राजेश भैया करीब 8–10 साल से हमारे घर नहीं आए थे, और इनके व्यवहार में हमेशा घमंड की अति रहती थी, इसलिए मन में और भी अधिक उत्सुकता जागी, कि आज ये कैसे आए हैं......? इन जैसे व्यक्ति की अस्त व्यस्त दशा देखकर मुझसे रहा नहीं गया और वे जैसे ही घर से गये, मैंने माँ से पूछाः

"माँ! सब ठीक तो है न!! ये भैया आज अपने यहाँ.....?? इतनी सुबह किसलिए आये जो कभी सीधे मुँह बात तक नहीं करते थे....?"

उस पर मां ने जो बताया वो मेरे लिए घोर आश्चर्यजनक था!

राजेश भैया पिछले पाँच सालों में शेयर बाज़ार में बुरी तरह बर्बाद हो गए और करीब 20 करोड़ रुपये स्वाहा हो गए। नगर निगम के जो कॉन्ट्रैक्ट लिए और पूरा किया, उस काम का भुगतान कमिश्नर ने रोक दिया जिससे इनको और बड़ा झटका लगा।

बाकी कामों को पूरा करने के लिए इतने बड़े सेठ को बाज़ार से सूदखोरों से 40 लाख रुपए लेने पड़े।

और अब वो 40 लाख रुपये का ब्याज बढ़ते बढ़ते 70 लाख हो गए हैं। अब इनके पास खाने के पैसे भी नहीं बचे हैं और इसीलिए ये अपना आलीशान बंगला जो शहर की सबसे धनाढ्य बस्ती में है, बेचना पड़ है।

मुझे एक झटका सा लगा। लेकिन माँ ने जो आगे बताया वो और भी बड़ा झटका था, जिसने मुझे ये सब लिखने पर मजबूर कर दिया।

माँ ने बता रही थीं: आज से लगभग 50 वर्ष पहले एक गरीब बूढ़ी महिला ने राजेश भैया के पिताजी से 40 रुपये उधार लिए थे और उसकी एवज में अपनी चांदी की मोटी पायल, झुमके, चैन आदि इनके पास गिरवी रखी थी।

वो बूढ़ी माँ ने खून पसीना एक करके तीन चार सालों में 40 रुपये ब्याज सहित चुका भी दिए, लेकिन इनके पिताजी के मन में चोर समा गया और बूढ़ी अम्मा को झूठे हिसाब किताब बताकर जबरन ब्याज बढ़ाते रहे और उसके जेवर देने से मुकर गए।

कुछ महीनों के संघर्ष के बाद वो बूढ़ी अम्मा थक गई!

हमारा निवास पास में ही था और मैं भी नई नई तेरे पापा के साथ शादी करके आयी थी । उस दिन वो बूढ़ी अम्मा उनके घर गई और फुट फुट के रोई।

रोते रोते बस एक ही बात बोले जा रही थीः

तेरा सर्वनाश होगा! मेरे 40 रुपये तेरी नस नस से निकलेंगे! नहीं चाहिए मेरे को मेरे जेवर तू रख! अब यही तेरी तबाही का कारण होंगे !

और कुछ दिन में वो बूढ़ी अम्मा इस दुनिया से चल बसी!

वो 40 रुपये थे जो आज पचास वर्षों में 40 लाख मूलधन + 30 लाख ब्याज होकर 70 लाख हो गए हैं।

इन 70 लाख की वजह से तेरे राजेश भैया की जीते जी मरने वाली हालात हो गयी है बेटा!

मैं यह सब सुनकर अवाक रह गया!

आज तक सुना था कि ऊपरवाले की लाठी में आवाज़ नहीं होती, मगर आज मेरे सामने सब कुछ प्रत्यक्ष था।

ऊपरवाले की अदालत में देर है पर अंधेर नहीं!

न्याय है है और अवश्य है!!!

भूपेंद्र सारस्वत 'सारथी'
बरेली (उ०प्र०).

ताम्रजल सभी के लिए नहीं

तांबे के बर्तन में रखा पानी (ताम्रजल) पाचन सुधारने और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए जाना जाता है।

लेकिन आयुर्वेद इसे उष्ण और तिक्त-कषाय गुण वाला मानता है, जो पित्त और अग्नि को बढ़ाता है। कुछ स्वास्थ्य स्थितियों में इसका सेवन लाभ से अधिक हानि पहुंचा सकता है।

किन्हें ताम्रजल नहीं पीना चाहिए

मधुमेह (डायबटीज) रोगी वैज्ञानिक शोध के अनुसार उच्च कॉपर स्तर (≥109.4 μg/dL) ब्लड शुगर अस्थिरता, ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और रक्त वाहिकाओं की मरम्मत में कमी ला सकता है।

अत्यधिक पित्त प्रकृति वाले लोग तांबा पित्त को और बढ़ा सकता है, जिससे अम्लपित्त, जलन, मुँह के छाले बढ़ सकते हैं।

किडनी रोगी

कॉपर का अतिव्यय किडनी पर अतिरिक्त भार डाल सकता है, जिससे कॉपर टॉक्सिसिटी का खतरा ।

ताम्रजल सभी के लिए नहीं

लीवर रोगी लीवर कॉपर मेटाबोलिज्म का मुख्य केंद्र है, रोग की स्थिति में असंतुलन तेजी से बढ़ सकता है।

शिशु और छोटे बच्चे उनका मेटाबॉलिज़्म संवेदनशील होता है, अतः नियमित ताम्रजल उपयुक्त नहीं।

कॉपर एलर्जी वाले लोग दुर्लभ, परंतु ऐसे लोगों में उल्टी, मितली, पेट दर्द जैसे त्वरित लक्षण हो सकते हैं।

सुरक्षित सेवन के सुझाव

नित्य न लें, हफ्ते में 2-3 बार पर्याप्त पानी 6-8 घंटे से ज्यादा तांबे में न रखें

गर्मियों में और पित्त वृद्धि की स्थिति में सीमित करें

मधुमेह, किडनी, लीवर रोग या कॉपर एलर्जी में डॉक्टर/वैद्य से सलाह लें

अपनी प्रकृति और मौसम के अनुसार सेवन करें

ताम्रजल एक पारंपरिक और लाभकारी पेय है, पर यह हर किसी के लिए उपयुक्त नहीं।

आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञान दोनों यह बताते हैं कि कुछ स्वास्थ्य स्थितियों में इसका सेवन सावधानी से करना चाहिए।

स्वास्थ्य लाभ तभी मिलेंगे जब इसका प्रयोग संतुलन, सही समय और व्यक्तिगत प्रकृति के अनुसार किया जाए।

याद रखें सही मात्रा में लिया गया जल अमृत है, पर असावधानी से वही हानि पहुँचा सकता है।

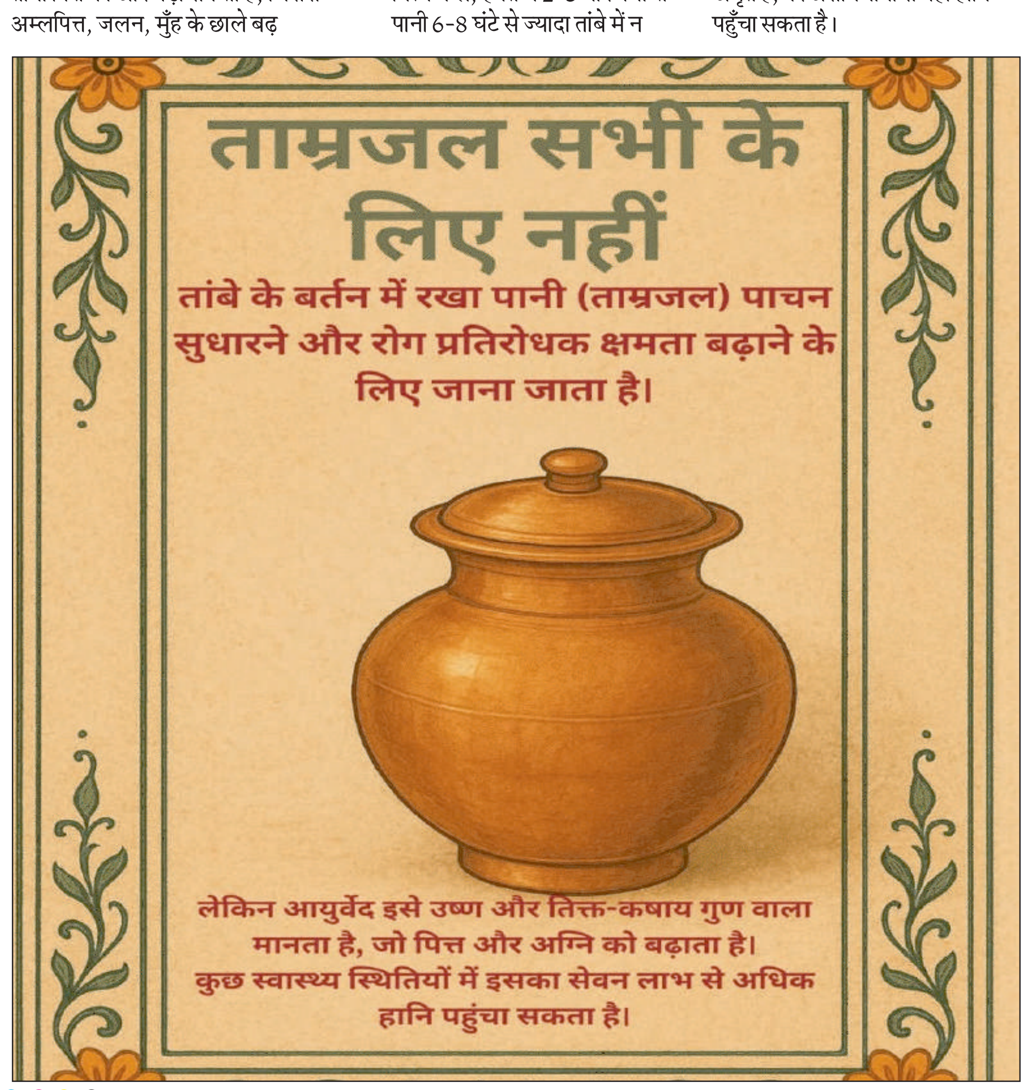

मित्रता—एक अनमोल उपहार

मित्रता एक सुंदर बंध है,
जो जीवन को और अधिक मधुर,
और सार्थक बना देता है।

क्या एक स्त्री और पुरुष के बीच
निष्कलुष मित्रता संभव है?

हाँ, संभव है—पूर्णतः संभव।
जब दोनों के भीतर चेतना की परिपक्वता हो,
विचारों में संतुलन हो,
और हृदय में मर्यादा हो—

तब यह संबंध देह की सीमाओं से परे जाकर
एक उच्चतर आयाम को स्पर्श करता है।

जहाँ आकर्षण नहीं,
अपितु आत्मीयता हो
जहाँ अपेक्षा नहीं,
अपितु सहज स्वीकार हो
वहीं सच्ची मित्रता का जन्म होता है।

कभी-कभी मन आकुल हो उठता है—
अपने हृदय के विचारों को
किसी के समक्ष व्यक्त करने के लिए

पर वह कोई ऐसा हो—
जो न केवल सुन सके,
अपितु समझ भी सके
जो हमारे शब्दों के परे छिपे मौन को भी पढ़ सके,
और फिर भी निष्पक्ष रहकर
सत्य का दर्पण हमारे सम्मुख रख सके।

कभी केवल शब्द नहीं,
अपितु संवाद की ऊर्जा ही
मन के बोझ को विलीन कर देती है।

सच्चा मित्र वही है—
जो हमारे अंधकार में दीपक बनकर नहीं,
अपितु हमारे भीतर के प्रकाश का स्मरण कराकर
हमें स्वयं प्रकाशित कर दे।

ऐसा मित्र मिलना—
न केवल सौभाग्य,
अपितु ईश्वर की एक कृपा ही है।

पिंकी कुंडू

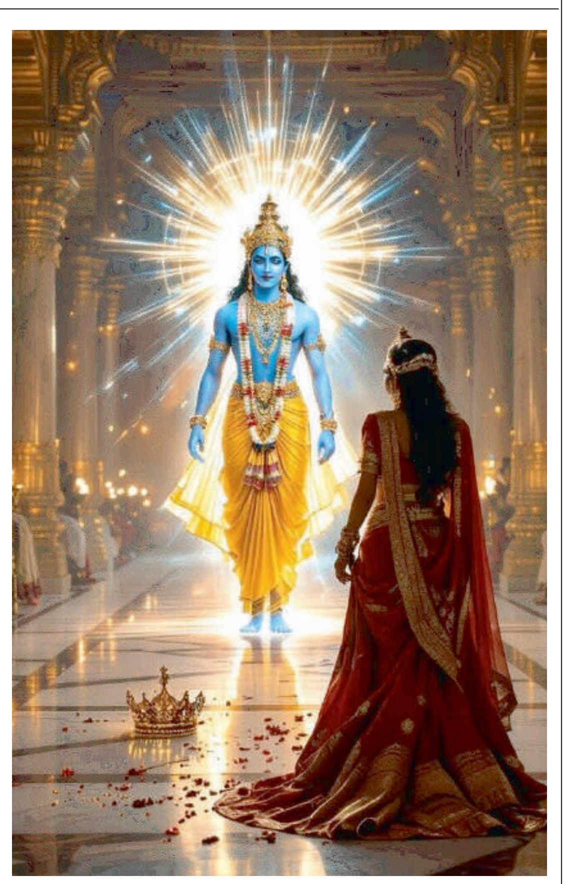

मकान सूचीकरण व गणना कार्य जिम्मेदारी से करें: डीसी

जनगणना 2027 के पहले चरण को लेकर जिलाभर में चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में डीसी ने दिए पारदर्शिता के निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 07 अप्रैल। भारत की जनगणना-2027 के प्रथम चरण के अंतर्गत मकान सूचीकरण एवं गणना कार्य को लेकर डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल के मार्गदर्शन में जिलाभर में एन्यूमरेटर और सुपरवाइजर हेतु 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी है। ट्रेनिंग के दूसरे दिन मंगलवार को फील्ड ट्रेनरों ने गणना को लेकर विस्तार से जानकारी दी। जिला में 17 स्थानों पर तीन दिवसीय ट्रेंनिग कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि जनगणना एक अत्यंत महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य है, जिसके आंकड़े देश की भविष्य की विकास योजनाओं और नीतियों के निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। उन्होंने निर्देश

दिए कि प्रथम चरण के कार्य को पूरी जिम्मेदारी, पारदर्शिता और सावधानी के साथ संपादित किया जाए, ताकि सटीक और विश्वसनीय आंकड़े प्राप्त हो सकें। उन्होंने कहा कि आम नागरिकों और जनप्रतिनिधियों को जनगणना प्रक्रिया की पूरी जानकारी दी जाए, जिससे किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न हो और सभी के सहयोग से यह कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया जा सके।

उन्होंने जनगणना 2027 से संबंधित दिशा-निर्देशों का गहन अध्ययन कर उसी के अनुरूप कार्य करने पर जोर दिया।

प्रशिक्षण सत्र के दौरान फील्ड ट्रेनर्स ने एन्यूमरेटर और सुपरवाइजर को उनके दायित्वों से अवगत कराते हुए बताया कि किस प्रकार सही और प्रमाणित डेटा एकत्रित कर निर्धारित प्रणाली में समय पर अपलोड किया जाएगा, जिससे गणना कार्य का सुचारू संचालन सुनिश्चित हो सके। फील्ड ट्रैनर द्वारा यूजर मैनेजमेंट सिस्टम पर भी विस्तार से प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें यूजर अकाउंट निर्माण, एडमिन व जनरल यूजर की भूमिकाएं, ट्रेनर्स, एन्यूमरेटर और सुपरवाइजर (ई एंड एस) की जिम्मेदारियां, सिंगल व बल्क अकाउंट क्रिएशन सहित विभिन्न प्रक्रियाओं की जानकारी दी गई।

एसडीएम रेणुका नांदल ने खाद्य आपूर्ति विभाग के अधिकारियों के साथ छारा खरीद केंद्र का किया निरीक्षण

गेहूं उपज बिक्री में किसानों को ना हो कोई परेशानी : एसडीएम

बहादुरगढ़, 07 अप्रैल। एसडीएम रेणुका नांदल ने मंगलवार को छारा खरीद केंद्र का दौरा कर गेहूं खरीद प्रक्रिया का जायजा लिया। उन्होंने खरीद एजेंसियों व संबंधित अधिकारियों को नियमानुसार खरीद कार्य सुचारू रूप से संचालित करने व तिरपाल की समुचित व्यवस्था के लिए जरूरी निर्देश दिए।

उन्होंने यह सुनिश्चित करने को कहा कि किसानों को अपनी उपज बेचने में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

उन्होंने कहा कि खरीद एजेंसी अनुमानित आवक का सही अध्ययन कर अपनी रणनीति तैयार करें, ताकि छारा खरीद केंद्र में भीड़भाड़ न हो और किसानों को अपनी फसल बेचने में कोई कठिनाई न आए। उन्होंने केंद्र पर स्वच्छ पेयजल, शौचालय, बिजली और सफाई व्यवस्था का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि खरीद प्रक्रिया को सुविधाजनक और पारदर्शी

बनाने के लिए प्रशासन पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

एसडीएम ने कहा कि सरकार द्वारा गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2585 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि भुगतान प्रक्रिया में किसी प्रकार की देरी न हो और पूरी पारदर्शिता के साथ राशि सीधे किसानों के खातों में भेजी जाए। प्रशासन खरीद प्रक्रिया को सुचारू रखने के लिए लगातार निगरानी कर रहा है।

गेंहू उपज सुखाकर बिक्री के लिए लाएं किसान

एसडीएम रेणुका नांदल ने क्षेत्र के किसानों से अपील करते हुए कहा कि किसान अपनी उपज को पूरी तरह सुखाकर ही मंडियों व केंद्रों पर लाएं, ताकि नमी की समस्या के कारण किसी को परेशानी न हो और खरीद प्रक्रिया सुगमता से हो सके। उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकार की ओर से तय मानकों के अनुसार ही उपज खरीद की जाएगी। इस अवसर पर डीएफएससी राजेश्वर मुदगिल, एएफएसओ अमरजीत सिंह व सपना देवी, सचिव विधासागर, निरीक्षक अजय कबलाना और रंजन यादव सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

झज्जर स्थित महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय का दीक्षांत समारोह आयोजित

हरियाणा के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, शहरी स्थानीय निकाय मंत्री श्री विपुल गोयल ने दीक्षांत एवं पुरस्कार वितरण समारोह में छात्राओं को किया पुरस्कृत

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 07 अप्रैल। हरियाणा के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, शहरी स्थानीय निकाय मंत्री श्री विपुल गोयल ने कहा कि

बेटियां हमारे देश और समाज का गौरव है, एक बेटी के शिक्षित होने से दो परिवारों का भला होता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 2047 के विकसित भारत विजन में हमारी बेटियां ध्वजवाहक बनेंगी।

कैबिनेट मंत्री श्री विपुल गोयल मंगलवार को महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय के दीक्षांत एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि संबोधन दे रहे थे।

उन्होंने महाविद्यालय के विकास के लिए 11 लाख रुपये देने की घोषणा की

इस बीच कालेज प्रबंधन समिति के अध्यक्ष राजकुमार गोयल ने कैबिनेट मंत्री का स्वागत करते हुए कालेज की गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

वहीं प्राचार्या नीलम गर्ग ने कालेज की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

"बेटी पढ़ेगी तो समाज बढ़ेगा": श्री गोयल

मुख्य अतिथि श्री विपुल गोयल ने कहा कि

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने प्रदेश के पानीपत शहर से बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरुआत की थी। निरंतर प्रयासों और सकारात्मक बदलावों के परिणामस्वरूप आज हमारा लिंगानुपात बढ़कर लगभग 950 तक पहुंच गया है।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में शिक्षा सहित हर क्षेत्र में विकास परियोजनाओं और योजनाओं को बढ़ावा मिल रहा है।

बेटियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा लगातार नए स्कूल और कॉलेज खोले जा रहे हैं, ताकि हर बेटी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।

वर्ष 2014 से पहले जहां एमबीबीएस की केवल 700 सीटें थीं, वहीं आज यह संख्या बढ़कर लगभग 2000 हो गई है। यह परिवर्तन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व और वर्तमान प्रदेश सरकार की नीतियों का परिणाम है।

उन्होंने कहा कि पुरुष अकेला पढ़ता है, लेकिन जब एक महिला शिक्षित होती है तो वह पूरे परिवार को शिक्षित करती है।

बेटियों को चाहिए कि वे डिग्री प्राप्त कर अपने जीवन के सपनों को साकार करें और समाज में अपनी पहचान स्थापित करें। उन्होंने बेटियों से आह्वान किया कि वो इस वातावरण में देश व समाज के उत्थान में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करे।

मुख्य अतिथि श्री विपुल गोयल ने कहा कि महिला सशक्तिकरण प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का संकल्प है, जिसे हरियाणा में मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में सिद्धि तक लेकर जाने के लिए काम किया जा रहा है। आज हर क्षेत्र में बेटियां मेहनत के बलबूते पर प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं।

उन्होंने डिग्री हासिल करने वाली सभी छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि डिग्री लेना बहुत बड़ी बात है, डिग्री मिलने से केवल विद्यार्थी ही नहीं उनके माता पिता भी फक्र महसूस करते हैं।

उन्होंने समारोह के दौरान स्नातकोत्तर व स्नातक उतीर्ण कर चुकी छात्राओं को डिग्री प्रदान करते हुए जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कठिन परिश्रम के साथ जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में मंच संचालन संजय शर्मा ने किया

यह अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति रहे मौजूद

इस अवसर डीएमसी अभिनव सिवाच आईएएस, तहसीलदार शेखर नरवाल, दीपक अग्रवाल, महाराजा अग्रसेन कालेज प्रबंधन समिति के उप प्रधान प्रवीण गोयल, सचिव गौरव गोयल, तरुण सिंघल, कार्यकारिणी सदस्य शीतल कुच्छल, मनीष बसंल, झज्जर गौशाला प्रधान प्रमोद बंसल, केशव सिंघल, प्रकाश चंद गर्ग, प्रदीप ऐरन, अंशुल गर्ग, गोपाल गोयल, दिनेश गोयल, सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए आए आवेदनों को लेकर मीटिंग आयोजित

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल की अध्यक्षता में बैठक आयोजित

झज्जर, 07 अप्रैल। गंभीर बीमारियों से जूझ रहे जरूरतमंद मरीजों के इलाज में आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से मंगलवार को उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में लघु सचिवालय स्थित सभागार में मुख्यमंत्री राहत कोष से संबंधित मामलों पर निर्णय लेने हेतु बैठक आयोजित की गई। बैठक में हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित 25 गंभीर बीमारियों की सूची के आधार पर जिला झज्जर में प्राप्त हुए कुल 9 आवेदनों पर विचार किया गया, जिसमें जरूरी दस्तावेजों की पूर्ति या चिकित्सा सत्यापन के उपरांत निर्णय लिया जाएगा। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बैठक के दौरान कहा कि मुख्यमंत्री राहत कोष राज्य सरकार की एक संवेदनशील और जन-कल्याणकारी योजना है, जिसका उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर मरीजों को गंभीर बीमारियों के इलाज में मदद देना है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि ऐसे जरूरतमंदों की पहचान समय पर की जाए और उनके केस को त्वरित कार्रवाई के साथ संबंधित स्तर तक पहुंचाया जाए। इस अवसर पर सीटीएम ऋतु बंसीवाल, नगर परिषद के चेयरमैन जिले सिंह सैनी, बहादुरगढ़ पंचायत समिति अध्यक्ष रचिता रानी, स्वास्थ्य विभाग से नोडल अधिकारी डॉ पूनम बिश्नोई सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए खेल एक प्रभावी माध्यम : डीसी

नशे के खिलाफ जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ग का सहयोग जरूरी

गांव डीघल स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय परिसर में जिला स्तरीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता 11 अप्रैल को : डीसी

झज्जर, 07 अप्रैल। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि युवाओं को नशीले पदार्थों से दूर रखने, स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने तथा खेल गतिविधियों के प्रति प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 11 अप्रैल को सुबह 7 बजे गांव डीघल स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय परिसर में जिला स्तरीय वॉलीबॉल खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा।

इस प्रतियोगिता में केवल व्लाक स्तर पर चयनित कुल 11 टीमें भाग लेंगी, जिनमें सीनियर वर्ग की 7 लड़के और लड़कियों की 4 टीमें शामिल हैं।

उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता के माध्यम से युवाओं को खेलों के प्रति आकर्षित करने के साथ-साथ उन्हें नशे जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का संदेश दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि खेल गतिविधियां न केवल शारीरिक और मानसिक विकास में सहायक होती हैं, बल्कि अनुशासन, टीम भावना और सकारात्मक सोच को भी बढ़ावा देती हैं। वर्तमान समय में युवाओं को नशे जैसी गंभीर समस्या से दूर रखने के लिए खेल एक प्रभावी माध्यम बनकर उभर रहे हैं। उपायुक्त ने संबंधित विभागों एवं अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं जैसे खेल मैदान की तैयारी, पेयजल, चिकित्सा सुविधा, सुरक्षा व्यवस्था एवं अन्य मूलभूत सुविधाएं समय पर सुनिश्चित की जाएं, ताकि प्रतिभागियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे अपने साथियों को भी खेलों से जुड़ने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि नशे से दूर रहकर खेलों को अपनाना ही एक स्वस्थ, सशक्त एवं समृद्ध समाज की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

डीसी ने फसल खरीद एवं एलपीजी आपूर्ति व्यवस्थाओं की समीक्षा कर दिए आवश्यक निर्देश

लघु सचिवालय स्थित सभागार में अधिकारियों की बैठक आयोजित

झज्जर, 07 अप्रैल। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में मंगलवार को लघु सचिवालय सभागार में रबी फसल खरीद एवं घरेलू गैस आपूर्ति व्यवस्था को लेकर संबंधित विभागों की एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में डीसी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि फसल खरीद प्रक्रिया पूरी तरह सुचारू एवं पारदर्शी ढंग से संचालित हो, ताकि किसानों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

उन्होंने कहा कि सरसों एवं गेहूं की खरीद के दौरान अनाज मंडियों एवं खरीद केंद्रों पर सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त रखी जाएं। किसानों की सुविधा को प्राथमिकता देते हुए यह सुनिश्चित किया जाए कि फसल बिक्री के दौरान उन्हें किसी भी प्रकार की परेशानी न हो।

बैठक के दौरान मुख्य सचिव हरियाणा श्री अनुराग रस्तोगी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े और प्रदेश के सभी जिलाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए खरीद व्यवस्था को सुचारू बनाए

रखने पर जोर दिया।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि ई-खरीद प्रक्रिया के अंतर्गत वेरिफिकेशन का कार्य समय रहते पूर्ण किया जाए, ताकि मंडियों में अधिक आवक के समय जाम की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने यह भी कहा कि फसल खरीद में अनावश्यक देरी न हो तथा तेजी से कार्य सुनिश्चित किया जाए, जिससे मंडियों में भीड़ नियंत्रित रहे। साथ ही किसानों से अपील की कि वे अपनी फसल को अच्छी तरह सुखाकर ही मंडियों में लाएं, ताकि खरीद प्रक्रिया में तेजी लाई जा सके।

उपायुक्त ने लिफ्टिंग व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने के निर्देश देते हुए कहा कि नीलामी के बाद फसल के उठान में किसी प्रकार की बाधा नहीं आनी चाहिए। गोदामों में अधिक से अधिक अनलोडिंग पॉइंट स्थापित किए जाएं, जिससे समय पर उठान सुनिश्चित हो सके।

उपभोक्ताओं को समय पर उपलब्ध कराएं घरेलू गैस सिलेंडर

डीसी ने खाद्य एवं पूर्ति विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले में एलपीजी की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित है, ऐसे में उपभोक्ताओं को गैस सिलेंडर प्राप्त करने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उपभोक्ताओं को घर-घर गैस की डिलीवरी समय पर सुनिश्चित की जाए, ताकि एजेंसियों पर भीड़ न बढ़े। साथ ही घरेलू गैस का कमर्शियल उपयोग रोकने के लिए नियमित रूप से जांच एवं छापेमारी अभियान चलाने के निर्देश भी दिए।

उन्होंने पीएनजी गैस कनेक्शन को लेकर जरूरी निर्देश दिए।

इस अवसर पर एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच, एसडीएम झज्जर रवि मीणा, डीएफओ साहिती रेड्डी, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल एसडीएम बादली विशाल, सीटीएम ऋतु बंसीवाल, डीएफएससी राजेश्वर मुदगिल, एएफएसओ अमरजीत सिंह, सुमित हुड्डा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

जयपुर से कृषि सुधारों का नया अध्याय शुरू, किसानों की आय और फूड सिक्योरिटी पर फोकस

संगिनी घोष

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर जयपुर से कृषि सुधारों का एक नया अध्याय शुरू हुआ, जिसमें किसानों की आय बढ़ाने, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और पोषण सुधार पर विशेष ध्यान दिया गया है।

पश्चिमी क्षेत्रीय कृषि सम्मेलन में मंत्री ने तीन प्रमुख लक्ष्यों—किसानों की आय, फूड सिक्योरिटी और न्यूट्रीशन—पर जोर देते हुए कृषि क्षेत्र के समग्र विकास की दिशा प्रस्तुत की।

फार्मर आईडी से बदलेगा सिस्टम

फार्मर आईडी के माध्यम से खाद, लोन और सरकारी सहायता तक पहुंच को आसान और पारदर्शी बनाया जाएगा, जिससे किसानों को सीधा लाभ मिलेगा।

संरचनात्मक सुधारों पर जोर

विकसित कृषि संकल्प अभियान और राज्य स्तरीय एग्रीकल्चर रोडमैप के जरिए खेती को नई दिशा देने और दीर्घकालिक विकास सुनिश्चित करने की योजना है।

टीम एग्रीकल्चर का दृष्टिकोण

"टीम एग्रीकल्चर" के तहत केंद्र और राज्य मिलकर किसान कल्याण योजनाओं को तेज़ी से लागू करेंगे, जिससे बेहतर परिणाम सामने आएंगे।

राज्यों की व्यापक भागीदारी

सम्मेलन में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गोवा के कृषि मंत्री, अधिकारी, वैज्ञानिक और प्रगतिशील किसान शामिल हुए। उद्घाटन सत्र में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

ऐसे देखें तो यह पहल समन्वित और तकनीक आधारित कृषि सुधारों के जरिए खेती को अधिक लाभकारी और टिकाऊ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मुख्य बिंदु

* जयपुर से कृषि सुधारों की नई पहल
* शिवराज सिंह चौहान की अगुवाई
* किसानों की आय, फूड सिक्योरिटी और न्यूट्रीशन पर जोर
* फार्मर आईडी से सेवाओं में पारदर्शिता
* विकसित कृषि संकल्प अभियान और राज्य रोडमैप
* "टीम एग्रीकल्चर" के तहत केंद्र-राज्य समन्वय
* उद्घाटन में भजनलाल शर्मा की उपस्थिति

SEO Meta Description:

जयपुर से शुरू हुए कृषि सुधारों में किसानों की आय, फूड सिक्योरिटी, फार्मर आईडी और केंद्र-राज्य समन्वय पर जोर दिया गया है।

जब अल्फ़ाज़ तराज़ू पर तौले जाने लगते हैं : डॉ. विक्रम चौरसिया

डॉ. विक्रम चौरसिया

आज के समय में, जहाँ हर चीज़ की कीमत तय है, वहाँ इंसानी भावनाएँ और अल्फ़ाज़ भी तौले जाने लगे हैं ,स्वार्थ और लाभ-हानि के तराजू पर,एक दफा एक युवक अपनी डायरी लेकर निकला। उसमें उसने अपने जज़्बात और विचार लिखे थे। वह चाहता था कि कोई उसके शब्दों की कीमत समझे। रास्ते में उसे एक कबाड़ी मिला। युवक ने अपनी डायरी उसे दिखा दी।

कबाड़ी ने पन्ने पलटे और कहा कबाड़ में डालेंगे तो कुछ पैसे मिल जाएंगे।यह सुनकर युवक चुप हो गया। जो उसके लिए अनमोल था, वह किसी के लिए सिर्फ कागज़ था।यही आज के समाज की सच्चाई है जहाँ शब्दों की गहराई नहीं, बल्कि उनका फायदा देखा जाता है।लेकिन सच यह है कि अल्फ़ाज़ कभी रद्दी नहीं होते। वे इंसान के मन और आत्मा की आवाज़ होते हैं। उनकी कीमत इस पर निर्भर करती है कि उन्हें समझने वाला कौन है।

इसीलिए, खुद को कभी कम मत समझिए।₹500 का नोट चाहे कितना भी पुराना, गंदा या मुड़ा हुआ क्यों न हो, उसकी कीमत कम नहीं होती।वैसे ही, जीवन में लोग आपको कितना भी नीचा दिखाएँ या परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन हों आपकी असली कीमत कभी कम नहीं होती।एक और उदाहरण देखिए न

एक पत्थर को कबाड़ी कुछ सिक्कों में तौलता है, लेकिन वही पत्थर जब ज्योहरी के पास जाता है, तो वह उसे हीरा बताता है।

फर्क पत्थर में नहीं, देखने वाले की समझ में होता है।इसलिए जरूरी है कि हम शब्दों और भावनाओं की कद्र करें, और खुद को भी सही नजरिए से देखें।अंत में बस इतना समझ लीजिए, अल्फ़ाज़ की कीमत कम नहीं होती, बस उन्हें समझने वाले कम हो जाते हैं।

चिंतक/मेंटर/ एक्टिविस्ट/दिल्ली विश्वविद्यालय

आमजन के स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रहा जन स्वास्थ्य विभाग

"घर की बही काका लिखनीया, रोक कौन?" समाधान के बगैर शिकायत बंद करवाने के ऐसे हैं विभाग के हालात

हरियाणा हिसार: राजेश सलूजा

उकलाना के अनेक गली-मोहल्लों में सीवरेज व गंदे पानी का ओवरफ्लो होने से लोगों का जीना दूभर हो गया है। स्थानीय निवासियों का आरोप है कि जन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को कई बार अवगत करवाने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं किया जा रहा है।

लोगों का कहना है कि जन स्वास्थ्य विभाग के टोल फ्री नंबर 1800-180-5678 पर शिकायत दर्ज कराने के बावजूद कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती। आरोप है कि विभाग बिना शिकायतकर्ता का पक्ष जाने ही शिकायतों को अपने आप बंद कर देता है, जिससे लोगों में भारी रोष व्याप्त है।

स्थानीय निवासियों ने बताया कि इसके अतिरिक्त उकलाना के अनेक गली-मोहल्लों में कई-कई महीनों से ऐसे ही हालात बने हुए हैं, जहां सीवरेज व गंदे पानी की निकासी की समस्या लगातार बनी हुई है। वहीं भूना फाटक से मंडी की ओर नीचे उतरते ही कई वर्षों से स्थिति बेहद खराब बनी हुई है, जहां सड़क पर गंदा पानी जमा रहता है और राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

लोगों का कहना है कि इस संबंध में विभाग को कई बार अवगत करवाया जा चुका है तथा टोल फ्री नंबर पर भी बार-बार शिकायत दर्ज करवाई गई है, लेकिन आज तक कोई स्थायी समाधान नहीं किया गया। स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया कि विभाग इस गंभीर समस्या की ओर ध्यान नहीं दे रहा, जिससे आमजन में नाराजगी बढ़ती जा रही है।

शिकायतकर्ता अमित गोयल ने बताया कि उन्होंने 11 मार्च को शिकायत संख्या 1024636 दर्ज करवाई थी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसके बाद 19 मार्च को शिकायत संख्या 1027805 तथा 25 मार्च को शिकायत संख्या 1029947 दर्ज करवाई गई, फिर भी समस्या जस की तस बनी हुई है।

कृष्ण कुमार ने बताया कि उनके द्वारा भी कई शिकायतें दर्ज करवाई गई हैं, जिनमें से 904843 व 1032793 शिकायत नंबर उन्हें याद हैं। उनका आरोप है कि विभाग इन शिकायतों को बिना समाधान किए ही बंद कर देता है।

इंदिरा कॉलोनी निवासी नवीन ने बताया कि शिकायत संख्या 1035281 के तहत समस्या दर्ज है, लेकिन कई बार अधिकारियों को अवगत करवाने के बावजूद किसी के कानों में जूं तक नहीं रेंग रही। उन्होंने कहा कि आमजन के स्वास्थ्य से खिलवाड़ किया जा रहा है और बच्चे भी इन गलियों में खेल नहीं सकते।

भैरी अकबरपुर रोड के नजदीक निवासी जगरूप सिंह ने बताया कि गंदा पानी उनके घरों तक पहुंच चुका है। विभाग के अधिकारियों को कई बार सूचना देने के बावजूद कोई सुनवाई नहीं हो रही। टोल फ्री नंबर पर शिकायत करने के बाद भी समस्या का समाधान नहीं किया गया।

स्थानीय निवासियों का कहना है कि क्षेत्र में सीवरेज और गंदे पानी के कारण बीमारी फैलने का खतरा लगातार बना हुआ है। जगह-जगह गंदगी फैलने से लोगों का घर से बाहर निकलना भी मुश्किल हो गया है। ऐसे में विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं।

लोगों का कहना है कि विभाग की कार्यशैली पर यह कहावत पूरी तरह सटीक बैठती है—

"घर की बही काका लिखनीया, रोक कौन?"

अमित गोयल ने सवाल उठाया कि जब

विभाग किसी की सुनवाई ही नहीं कर रहा, तो ऐसे पोर्टल और टोल फ्री नंबर चलाने का क्या लाभ, जिन पर सरकार का करोड़ों रुपये खर्च हो रहा है, लेकिन जनता को राहत नहीं मिल रही। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि समय रहते समस्या का समाधान नहीं किया गया, तो भविष्य में महामारी फैलने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता।

स्थानीय निवासियों ने प्रशासन से जल्द से जल्द समस्या का समाधान करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि यदि समय रहते कार्रवाई नहीं हुई, तो उन्हें मजबूरन आगे के कदम उठाने पड़ सकते हैं।

वहीं इस विषय पर जन स्वास्थ्य विभाग के कनिष्ठ अभियंता अजय ढुल से संपर्क किया गया। उन्होंने बताया कि पानी की निकासी कई दिनों से प्रभावित है और अधिक शिकायतें होने के कारण निपटान में 3 से 15 दिन तक का समय लग सकता है। उन्होंने आश्वासन दिया कि समस्या का जल्द समाधान करवाया जाएगा।

बरवाला में बुलडोजर मोड में प्रशासन, अवैध कॉलोनियों पर ताबड़तोड़ कार्रवाई

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) जिला प्रशासन ने हांसी-बरवाला रोड एवं हिसार-बरवाला रोड पर अवैध रूप से विकसित कॉलोनियों के खिलाफ लगातार सख्त रुख अपनाते हुए एक बार फिर बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया। "श्याम नगरी", "धर्म नगरी" और "गुरुनानक कॉम्प्लेक्स" नाम से विकसित करीब 12 से 13 एकड़ क्षेत्र में फैली कॉलोनियों में अवैध निर्माणों को ध्वस्त किया गया। खास बात यह रही कि धर्म नगरी कॉलोनी में आज दोबारा कार्रवाई करते हुए शेष बचे निर्माणों को भी हटाया गया।

यह कार्रवाई जिला नगर योजनाकार हिसार दिनेश कुमार के नेतृत्व में की गई। मौके पर ड्यूटी मजिस्ट्रेट के रूप में दक्षिण हरियाणा बिजली विभाग के उपमंडल अभियंता दिनेश कुमार मौजूद रहे। इसके अलावा कनिष्ठ अभियंता अमन और पटवारी शमशेर सहित विभाग की टीम ने पूरे अभियान को अंजाम दिया।

प्रशासनिक टीम ने जेसीबी मशीनों की सहायता से कॉलोनियों में किए गए अवैध निर्माणों, सड़कों व अन्य ढांचों को तोड़ दिया। कार्रवाई के दौरान कोई भी कॉलोनाइजर वैध दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए सामने नहीं आया, जिससे इन कॉलोनियों की अवैधता स्पष्ट हो गई।

कार्रवाई के दौरान डीटीपी दिनेश कुमार ने कड़े शब्दों में कहा कि बिना लाइसेंस और विभागीय स्वीकृति के काटी जा रही कॉलोनियों के खिलाफ विभाग लगातार अभियान चला रहा है और भविष्य में भी यह सख्ती जारी रहेगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि अवैध रूप से विकसित किसी भी कॉलोनी को नियमित नहीं किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि डीसी हिसार एवं नगर योजनाकार, प्रदेश मुख्यालय के सख्त आदेश हैं कि ऐसी अवैध कॉलोनियों को तुरंत प्रभाव से ध्वस्त किया जाए और आमजन को इसके प्रति जागरूक किया जाए। इसी के तहत विभाग द्वारा लगातार अभियान चलाकर कार्रवाई की जा रही है।

उन्होंने कहा कि कॉलोनाइजर आम लोगों को पक्की सड़क, बिजली, पानी और रजिस्ट्री के नाम पर गुमराह करते हैं, लेकिन जब विभाग कार्रवाई करता है तो वे मौके से गायब हो जाते हैं और नुकसान आम जनता को उठाना पड़ता है। इसलिए प्लॉट खरीदने से पहले विभागीय लाइसेंस, नक्शा और स्वीकृति की पूरी जांच करना अत्यंत जरूरी है।

डीटीपी ने कहा कि प्रशासन का उद्देश्य किसी को परेशान करना नहीं, बल्कि लोगों की जीवनभर की कमाई को सुरक्षित रखना है। अवैध कॉलोनियां भविष्य में न तो मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवा पाती हैं और न ही वहां सरकारी योजनाओं का लाभ मिल पाता है।

उन्होंने क्षेत्र के लोगों से अपील की कि यदि कहीं भी अवैध रूप से प्लॉटिंग या निर्माण किया जा रहा हो तो इसकी सूचना तुरंत विभाग को दें। शिकायतकर्ता की पहचान गोपनीय रखी जाएगी और त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

प्रशासन ने दोहराया कि अवैध कॉलोनाइजरों के खिलाफ अभियान आगे भी इसी तरह सख्ती से जारी रहेगा और किसी भी गैर-कानूनी गतिविधि को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

सेवा भारती: द्वारा निःशुल्क होमियोपैथिक शिविर,10 अप्रैल को

(भूपेंद्र सारस्वत 'सारथी', बरेली,उ०प्र०).

बहेड़ी (बरेली).. आगामी 10 अप्रैल को होम्योपैथी के जन्मदाता डॉक्टर सैमुअल क्रिश्चियन हैनीमैन साहब के जन्मदिन के अवसर पर 10 अप्रैल दिन शुक्रवार को एक नि;शुल्क होम्योपैथिक शिविर का आयोजन किया गया है। इस कैंप में प्रसिद्ध होमियोपैथिक चिकित्सक डॉ रति सारस्वत अपनी टीम सहित स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करेंगीं। यह निःशुल्क शिविर सरस्वती शिशु मंदिर भरत गली, माथुर रोड बहेड़ी (बरेली) में आयोजित किया गया है ! जिसका समय दोपहर 01:00 बजे से 04:00 बाजे तक रहेगा।

सेवा भारती के सर्वश्री सुरेश जी, श्री मुरारी लाल अग्रवाल जी, श्री दिनेश शर्मा जी, श्री चिंतामणि राठौर जी, श्री हीरा लाल तोमर जी, चौ० प्रेमवीर सिंह जी, श्री सेवा राम जी, श्री अतुल अग्रवाल जी, श्री सुनील गंगवार जी, मास्टर हरदयाल जी, सुश्री पुष्पा सिंह जी, श्री हरवंश गुप्ता जी, श्री वीरपाल जी (एड०) श्री अतुल प्रजापति जी, श्री रामनाथ राठौर जी श्री सुनील श्रीवास्तव जी, श्री कृष्ण स्वरूप शर्मा जी (हेड मास्टर RTD), श्री योगेंद्र सारस्वत जी एवम्‌ श्री उमेश शर्मा जी,.. आदि संभ्रांत लोगों ने आम जनता से अपील की है, कि शिविर में निःशुल्क होम्योपैथिक चिकित्सा का लाभ अधिक से अधिक लोग उठाएं।

डबवाली के डॉ धर्मपाल मित्तल 88 वें सेवा रत्न

हरियाणा हिसार :राजेश सलूजा

देश सेवा में समर्पित प्रमुख धार्मिक एवं सामाजिक संग़ठन अखिल भारतीय सेवा संघ की बैठक डबवाली में हुई ।जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष इन्द्र ग़ोयल जी ने की । बैठक में डबवाली के वरिष्ठ सदस्य एवं सचिव डॉ धर्मपाल मित्तल को सेवा रत्न सम्मान से नवाजा गया ।डॉ मित्तल पिछले 2 वर्षों से संघ के लिए कार्य कर रहे है ।इनकी निस्वार्थ सेवा एवं कार्यो को देखते हुए इन्हें सेवा रत्न सम्मान से नवाजा गया है । डॉ मित्तल ने कहा कि इस सम्मान को पाकर उनकी जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है ,भविष्य में सेवा संघ जो भी कार्य य्या जिम्मेदारी मुझे दी जाएगी ,मैं पूरी निष्ठा और ईमानदारी से उसे पूरा करने का पर्यास क्ररूँगा । इस अवसर पर राष्ट्रीय सचिव सेवा गौरव राजिंदर गर्ग ने कहा कि हमे ऐसे निष्ठावान कार्यकर्ताओ की आवश्यकता है जो पूरी ईमानदारी से सेवा प्रोजेक्ट में कार्य करें । इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष इन्द्र ग़ोयल,राष्ट्रीय सचिव राजिंदर गर्ग,प्रांतीय सदस्य आकाश सैन, डबवाली शाखा के अध्यक्ष ओम प्रकाश सिंगला,सचिव गौरव शर्मा,सेवा रत्न गिरधारी लाल गुप्ता, श्रीमती सरोज गुप्ता, कोषाध्यक्ष जगतनारायण पंडित,विजय रमेश आदि सदस्यों ने भी डॉ धर्मपाल मित्तल को बधाई दी ।

अभिमान ओर स्वाभिमान में कया भिन्नता है?

विद्या भूषण भरद्वाज

स्वाभिमान अभिमान नहीं। भिन्नता ही नहीं है, विरोध है। अभिमान दूसरे से अपने को श्रेष्ठ समझने का भाव है। अभिमान एक रोग है। किस-किस से अपने को श्रेष्ठ समझोगे? कोई सुंदर है ज्यादा, कोई स्वस्थ है ज्यादा, कोई प्रतिभाशाली है, कोई मेधावी है।

अभिमानी जीवन भर दुख झेलता है। जगह-जगह चोटें खाता है। उसका जीवन घाव और घाव से भरता चला जाता है। दूसरे से तुलना करने में अभिमान है। और मैं दूसरे से श्रेष्ठ हूं, ऐसी धारण में अभिमान है।

स्वाभिमान बात ही और है। स्वाभिमान अत्यंत विनम्र है। दूसरे से श्रेष्ठ होने का कोई सवाल नहीं है। सब अपनी-अपनी जगह अनूठे हैं। यह स्वाभिमान की स्वीकृति है कि कोई किसी से न ऊपर है, और कोई किसी से न नीचे है। एक छोटा-सा घास का फूल और आकाश का बड़े से बड़ा तारा, इस अस्तित्व में दोनों का समान मूल्य है। यह छोटा-सा घास का फूल भी न होगा तो अस्तित्व में कुछ कमी हो जाएगी, जो महातारा भी पूरी नहीं कर सकता।

स्वाभिमान इस बात की स्वीकृति है कि यहां प्रत्येक अनूठा है। और कोई दौड़ नहीं है, कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है, कोई महत्वाकांक्षा नहीं है। हां, यदि कोई दूसरा तुम पर आक्रामक होस्वाभिमान में कोई आक्रमण नहीं है, लेकिन अगर कोई दूसरा तुम पर आक्रामक हो तो स्वाभिमान में संघर्ष की क्षमता है—दूसरे को छोटा दिखाने के लिए नहीं, दूसरे का आक्रमण गलत है, हर आक्रमण गलत है यह सिद्ध करने को।

स्वाभिमान की कोई अकड़ नहीं। सीधा-सदा है। लेकिन बड़ी से बड़ी शक्ति दुनिया का स्वाभिमानी व्यक्ति को नीचा नहीं दिखा सकती। यह बड़ा अनूठा राज है। स्वाभिमानी व्यक्ति विनम्र है, इतना विनम्र है कि वह खुद ही सबसे पीछे खड़ा है। अब उसको और कहां पीछे पहुंचाओगे?

कोपले फिर फ़ूट आई-11
ओशो

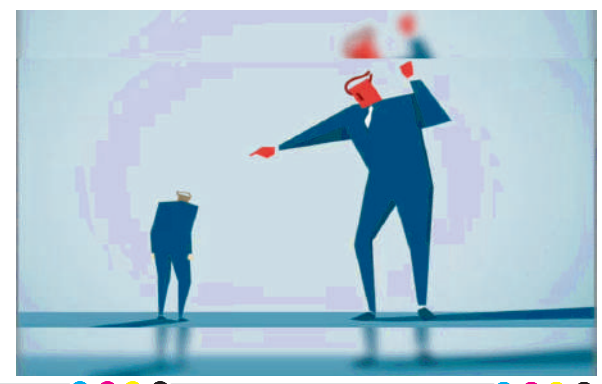

2030 का मार्ग: कौशल-आधारित शिक्षा किस प्रकार भारत के कार्यबल को बदल सकती है

● डॉ. विजय गर्ग

भारत अपनी आर्थिक यात्रा में एक निर्णायक क्षण पर खड़ा है। विश्व की सबसे युवा आबादी में से एक होने के कारण, देश अपने जनसांख्यिकीय लाभ को विकास का एक शक्तिशाली इंजन बनाने की क्षमता रखता है। फिर भी, यह वादा एक महत्वपूर्ण कारक — कौशल पर निर्भर करता है। व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से कक्षा में सीखने और वास्तविक रोजगार के बीच की खाई को पाटना यह निर्धारित कर सकता है कि क्या भारत 2030 तक वैश्विक प्रतिभा केंद्र बन जाएगा।

कौशल अंतर चुनौती

उच्च शिक्षा में प्रगति के बावजूद, भारत को शिक्षा और रोजगार क्षमता के बीच महत्वपूर्ण असंगति का सामना करना पड़ रहा है। कार्यबल के एक बड़े हिस्से में औपचारिक प्रशिक्षण का अभाव है, तथा लगभग 65% लोगों को कभी व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त नहीं हुई। साथ ही, उद्योगों ने नौकरी के लिए तैयार प्रतिभा को खोजने में कठिनाई की सूचना दी है, जो शैक्षणिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल के बीच गहरे अंतर को उजागर करता है।

चुनौती का पैमाना बहुत बड़ा है। अनुमान है कि 2030 तक भारत को हर साल लाखों कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होगी, साथ ही लगभग 29 मिलियन कुशल पेशेवरों की संभावित कमी का भी सामना करना पड़ेगा। तत्काल कार्रवाई के बिना, यह अंतर आर्थिक विकास को धीमा कर सकता है और लाखों युवाओं के अवसरों को सीमित कर सकता है।

व्यावसायिक शिक्षा: लुप्त कड़ी

व्यावसायिक शिक्षा, उद्योग से संबंधित व्यावहारिक कौशल पर ध्यान केंद्रित करके एक प्रत्यक्ष समाधान प्रदान करती है। पारंपरिक शैक्षणिक मार्गों के विपरीत, यह छात्रों को विशिष्ट करियर के लिए तैयार करता है। विनिर्माण और स्वास्थ्य देखभाल से लेकर डिजिटल प्रौद्योगिकियों और हरित ऊर्जा तक।

भारत ने स्किल इंडिया मिशन और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) के विशाल नेटवर्क जैसी पहलों के माध्यम से इस दिशा में पहले ही कदम उठाए हैं, जिनकी संख्या देश भर में लगभग 15,000 है। ये संस्थाएं युवाओं को व्यावहारिक कौशल प्रदान करने और रोजगार क्षमता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

उत्साहजनक रूप से, रोजगार क्षमता का स्तर बढ़ रहा है, जो हाल के वर्षों में 56% से अधिक हो गया है। हालाँकि, भविष्य की मांगों को पूरा करने के लिए इस प्रगति में तेजी आनी चाहिए।

कार्य की बदलती प्रकृति

भविष्य के कार्यबल को बुनियादी कौशल से अधिक की आवश्यकता होगी। तीव्र तकनीकी परिवर्तन उद्योगों में नौकरी की भूमिकाओं को नया रूप दे रहा है। 2030 तक, अधिकांश श्रमिकों को पुनः प्रशिक्षण या कौशल उन्नयन की आवश्यकता होगी, जबकि वर्तमान कौशल का लगभग 40% पुराना हो सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा और डेटा एनालिटिक्स जैसे उभरते क्षेत्र पहले से ही नई क्षमताओं की मांग को बढ़ा रहे हैं। हाल की जानकारी से पता चलता है कि ये डिजिटल कौशल भारत के विकसित हो रहे रोजगार बाजार में रोजगार योग्यता के लिए आवश्यक होते जा रहे हैं।

इसलिए व्यावसायिक शिक्षा को पारंपरिक व्यवसायों से आगे बढ़ना चाहिए तथा आधुनिक, प्रौद्योगिकी-संचालित प्रशिक्षण को अपनाना चाहिए।

कक्षा-उद्योग विभाजन को पाटना

भारत की शिक्षा प्रणाली में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है उद्योग की जरूरतों के अनुरूप तालमेल का अभाव। व्यावसायिक शिक्षा स्कूलों, प्रशिक्षण संस्थानों और नियोक्ताओं के बीच घनिष्ठ सहयोग को बढ़ावा देकर इस अंतर को पाट सकती है।

प्रमुख रणनीतियों में शामिल हैं

उद्योग साझेदारी: कंपनियां पाठ्यक्रम तैयार करने में मदद कर सकती हैं और इंटर्नशिप की पेशकश कर सकती हैं।

प्रशिक्षुता: वास्तविक अनुभव यह सुनिश्चित करता है कि छात्र नौकरी के लिए तैयार हैं।

लचीला शिक्षण पथ: शैक्षणिक और व्यावसायिक धाराओं को संयोजित करने से छात्रों को कई कैरियर विकल्पों का पता लगाने में मदद मिलती है।

इस तरह का एकीकरण यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षा केवल सैद्धांतिक नहीं बल्कि रोजगार के अवसरों से सीधे जुड़ी हुई है।

युवाओं को सशक्त बनाना और समावेशी विकास

सामाजिक समावेशन में व्यावसायिक शिक्षा भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह उन छात्रों के लिए अवसर प्रदान करता है जो उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते, जिससे उन्हें स्थिर आजीविका सुनिश्चित करने में मदद मिलती है। कौशल कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ना एक और सकारात्मक प्रवृत्ति है, जो अधिक समावेशी कार्यबल में योगदान देता है।

इसके अलावा, जैसे-जैसे भारत अपने विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों का विस्तार करेगा, उत्पादकता, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के लिए कुशल श्रमिक आवश्यक होंगे।

2030 का रास्ता

व्यावसायिक शिक्षा का पूर्ण लाभ उठाने के लिए भारत को निम्नलिखित करना होगा

गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुंच का विस्तार करें

उभरती प्रौद्योगिकियों से मेल खाने के लिए पाठ्यक्रम को अद्यतन करें

सार्वजनिक-निजी साझेदारी को मजबूत करें

व्यावसायिक करियर को सम्मानजनक और लाभदायक बनाएं

कौशल विकास में निवेश केवल एक सामाजिक प्राथमिकता नहीं है, बल्कि एक आर्थिक आवश्यकता भी है। अध्ययनों से पता चलता है कि 2030 तक केंद्रित कौशल प्रयासों से रोजगार और उत्पादकता में महत्वपूर्ण वृद्धि हो सकती है।

निष्कर्ष

कक्षाओं से लेकर करियर तक की यात्रा भारत की विकास कहानी के केंद्र में है। व्यावसायिक शिक्षा में न केवल व्यक्तिगत जीवन बल्कि सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को बदलने की शक्ति है। शिक्षा को उद्योग की आवश्यकताओं के साथ संरेखित करके तथा आजीवन सीखने को अपनाकर, भारत कुशल, अनुकूलनशील और भविष्य के लिए तैयार कार्यबल का निर्माण कर सकता है।

यदि प्रभावी ढंग से पोषित किया जाए, तो व्यावसायिक शिक्षा न केवल कौशल अंतर को पाट देगी, बल्कि भारत की वास्तविक क्षमताओं को भी उजागर करेगी। 2030 तक अपने युवाओं को एक संपन्न वैश्विक अर्थव्यवस्था का प्रेरक शक्ति बना देगी।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त

यह दृश्य असामान्य नहीं है। छुट्टियों के मौसम की शुरुआत के साथ, शहरों में कई अंग्रेजी बोलने वाले केंद्र दिखाई देते हैं, जो आकर्षक पैकेज और प्रेरक वादे प्रदान करते हैं। विज्ञापन शिक्षार्थियों को आश्वस्त करते हैं कि दो से तीन महीने के भीतर प्रवाह प्राप्त किया जा सकता है। कुछ लोग तो लक्ष्य पूरा न होने पर धन वापसी की गारंटी भी देते हैं।

संपादकीय
चिंतन-मनन

बचपन की बुनियाद — मातृत्व के रीति-रिवाज

डॉ. विजय गर्ग

बचपन मानव जीवन का सबसे मधुर और सुखद चरण होता है। इस चरण में बच्चे जो कुछ भी सीखते हैं, वह उनके पूरे जीवन का आधार बनता है। इस सीखने की यात्रा में माँ की भूमिका सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण होती है। माता ही बच्चे की पहली शिक्षिका होती हैं, जो उसे बिना किसी किताब या कक्षा के वास्तविक जीवन पाठ सिखाती हैं।

बच्चे अपने बचपन में सबसे पहले अपनी मां से बोलना सीखते हैं। माँ के मीठे शब्द, लोरी और स्नेह भरे वचन बच्चे की भाषा का आधार होते हैं। इसके अलावा, माँ ही बच्चे को चलना, खाना और अपने आस-पास की दुनिया को समझना सिखाती है। ये सभी बातें बच्चे के आत्मविश्वास को मजबूत करती हैं।

माँ न केवल दिन-प्रतिदिन की आदतें सिखाती है, बल्कि वह बच्चे में अच्छे मूल्य भी पैदा करती है। सत्यता, ईमानदारी, दया और सहयोग जैसे गुण माँ के शिक्षणों के माध्यम से ही बच्चे में विकसित होते हैं। जब माँ अपने कर्मों से ये मूल्य प्रदर्शित करती है, तो बच्चे उन्हें आसानी से अपना लेते हैं।

इसके अलावा, माँ बच्चे को जीवन की कठिनाइयों का सामना करना भी सिखाती है। वह अपने अनुभवों और सलाह के माध्यम से बच्चे को हर चुनौती का मुकाबला करने के लिए साहस प्रदान करती है। माँ का प्यार और समर्थन बच्चे के लिए एक मजबूत ढाल बन जाता है, जो उसे हर स्थिति में संभालता है।

आज के तेजी से बदलते समय में, जहां प्रौद्योगिकी और बाहरी प्रभाव बढ़ रहे हैं, मां की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। माँ बच्चे को सही और गलत में अंतर करना सिखाती है और उसे सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती है। बच्चों के जीवन में माँ का योगदान: शिक्षा और संस्कार बचपन जीवन का वह कोमल समय होता है जब मन एक कोरी स्लेट की तरह होता है। इस स्लेट पर सबसे पहले और गहरे अक्षर माँ द्वारा उकेरे जाते हैं। बच्चा दुनिया को माँ की आँखों से देखना शुरू कर देता है और उसकी वाणी के माध्यम से शब्दों को पहचानता है।

भाषा और संचार की शिक्षा बच्चे को अपनी मातृभाषा का ज्ञान उसकी मां से ही प्राप्त होता है। माँ द्वारा सुनाए जाने वाले पाठ, कहानियाँ और कथाएँ न केवल बच्चे के शब्दावली को बढ़ाती हैं, बल्कि उसे अपनी संस्कृति और विरासत से भी जोड़ती हैं।

नैतिक मूल्य-मूल्य और संस्कार सच बोलना, दूसरों का सम्मान करना और सहानुभूति रखना—यह गुण बच्चा स्कूल जाने से बहुत पहले अपनी माँ के व्यवहार से सीखता है।माँ बच्चे को सही और गलत में अंतर सिखाती हैं।उसकी छोटी-छोटी सलाह जीवन के बड़े निर्णय लेने में सहायक होती है।

मुसीबतों से लड़ने का साहस माँ धैर्य और सहनशीलता का जीवित उदाहरण है। बच्चा देखता है कि कैसे उसकी माँ मुस्कुराकर घर की चुनौतियों को हल करती है। यह देखकर बच्चे में भी आत्मविश्वास पैदा होता है कि वह किसी भी कठिनाई का सामना कर सकता है।

अनुशासन और शिष्टाचार समय पर उठना, खाने-पीने का तरीका और अपने आस-पास की सफाई जैसी बुनियादी आदतें केवल माँ ही करती हैं। यह अनुशासन बच्चे की भविष्य की सफलता के लिए आधार बनता है।

अंत में, यह कहना गलत नहीं होगा कि एक बच्चे के जीवन की सबसे बड़ी शिक्षा उसकी मां से ही शुरू होती है। माँ के प्यार, सहयोग और शिक्षाओं से ही बच्चा एक सफल और अच्छा इंसान बनता है। इसलिए हमें माँ की इस महान भूमिका का सम्मान और सराहना करनी चाहिए।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

संस्था निर्माता से जीवन मार्गदर्शक तक: डॉ. विजय गर्ग की यात्रा

कुछ लोग पदभार संभालते हैं, और कुछ ऐसे भी हैं जो जीवन को अपने हाथों में रखते हैं। डॉ। विजय गर्ग निस्संदेह दूसरे प्रकार के थे। लगभग चार दशकों तक, वह शैक्षणिक संस्थानों के प्रमुख रहे, तथा उन्होंने न केवल पाठ्यक्रम और समय-सारिणी को आकार दिया, बल्कि उनके दरवाजे से गुजरने वाले युवा भारतीयों की पीढ़ियों के चरित्र, महत्वाकांक्षा और विवेक को भी आकार दिया।

डॉ को कॉल करना गर्ग को केवल एक ₹रिटायर्ड प्रिंसिपल₹ के रूप में जाना, अक्षम्य अतिशयोक्ति का कार्य होगा। वह चाक से सने कोट में एक दार्शनिक थे, एक सुधारक जो विरोध के माध्यम से नहीं बल्कि धैर्यपूर्ण उदाहरण के माध्यम से काम करते थे, और एक विद्वान थे जिन्होंने पढ़ाते हुए भी सीखना बंद नहीं किया। उनका जीवन, करीब से जांचे जाने पर, एक करियर की तरह कम और एक समय में एक कक्षा द्वारा संचालित शांत क्रांति की तरह अधिक दिखता है।

डॉ। विजय गर्ग का जन्म ऐसे परिवार में हुआ था जो शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता की सीढ़ी नहीं बल्कि पवित्र जिम्मेदारी मानता था। बचपन से ही उन्हें यह विश्वास था कि स्वतंत्र रूप से दिया जाने वाला ज्ञान सबसे बड़ा उपहार है जो एक पीढ़ी दूसरे को दे सकती है। उनकी अपनी स्कूली शिक्षा, जो भौतिक संसाधनों में मामूली थी, लेकिन बौद्धिक कठोरता से भरपूर थी, ने उनमें शिक्षकों के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी, जो एक दिन वापस आ जाएगी और उनके अपने व्यवसाय में बदल जाएगी।

उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा का अनुसरण बहुत ही समर्पण के साथ किया, अंततः डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर ली - एक ऐसी उपलब्धि जो उनके लिए कभी भी प्रदर्शित करने लायक नहीं थी, बल्कि यह याद दिलाती थी कि अभी और कितना कुछ समझना बाकी है। उनके शैक्षणिक प्रशिक्षण ने उन्हें और भी बेहतर बना दिया, लेकिन उनका स्वभाव — धैर्यवान, जिज्ञासु और अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण था जो उन्हें असाधारण बनाता था।

₹एक अच्छा शिक्षक न केवल जानकारी स्थानांतरित करता है, बल्कि वह छात्र में उस प्रश्न को पूछने का साहस जगाता है जिसका कोई आसान उत्तर नहीं होता।

जब डॉ. गर्ग ने प्रिंसिपल का पद ग्रहण कर लिया, वह अपने साथ एक असामान्य दर्शन लेकर आए: कि किसी संस्था का प्रमुख उसके भीतर सबसे अधिक प्रतिबद्ध शिक्षार्थी होना चाहिए। वह जल्दी पहुंचा, देर तक रुका और दूसरों के घर जाने के बहुत बाद ही गलियारे में चलने के लिए जाना जाता था। — पुलिस को नहीं, बल्कि सोचने, अवलोकन करने और चुपचाप उन समस्याओं का समाधान करने के लिए जो संस्थाओं द्वारा कोनों में धूल की तरह जमा हो जाती हैं।

उनकी प्रशासनिक शैली न तो निरंकुश थी और न ही निष्क्रिय। उन्होंने शिक्षकों की बात साथियों के रूप में सुनी, छात्रों को वास्तविक मूल्य वाले व्यक्तियों के रूप में माना, और जोर देकर कहा कि किसी स्कूल का असली मापदंड उसके परीक्षा परिणाम नहीं बल्कि उसके द्वारा विकसित चरित्र की गुणवत्ता है। उनके नेतृत्व में, संस्थाएं भव्य घोषणाओं के माध्यम से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे, विचारशील सुधारों के लगातार संचय के माध्यम से पनपीं।

सहकर्मियों को याद आता है कि कैसे वह स्नातक होने के कई वर्षों बाद संघर्षरत छात्रों के नामों को याद करते थे, और कैसे वे चुपचाप मध्यस्थता करते थे — एक शब्द यहाँ, एक अवसर वहाँ प्रदान किया गया था जब एक युवा व्यक्ति का रास्ता संकीर्ण होता प्रतीत होता था। वह संवैधानिक रूप से उदासीनता के लिए असमर्थ था।

सेवानिवृत्ति, डॉ. विजय गर्ग, पता का परिवर्तन था, व्यवसाय का नहीं। उन्होंने औपचारिक प्रशासन से इस्तीफा दे दिया, लेकिन मन के जीवन से कभी नहीं। प्रिंसिपल का पद छोड़ने के बाद के वर्षों में, उन्होंने अपने दशकों के अवलोकन और चिंतन को लेखों, निबंधों और टिप्पणियों में लगाया है जो भारत भर के समाचार पत्रों और शैक्षिक पत्रिकाओं में नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं।

उनका लेखन उन्हीं गुणों से चिह्नित है जिन्होंने उनके नेतृत्व को परिभाषित किया था: विचार की स्पष्टता, अभिव्यक्ति का गर्मजोशी, तथा केवल फैशन के बजाय व्यावहारिक और नैतिक पर जोर देना। वह शिक्षा नीति, समकालीन युवाओं के सामने आने वाली चुनौतियों, स्कूली शिक्षा में मूल्यों का महत्व, तथा धैर्यपूर्ण शिक्षण के माध्यम से सभ्य समाज के निर्माण के धीमे, अपूरणीय कार्य के बारे में लिखते हैं। पाठक अक्सर यह देखते हैं कि उनका गद्य किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बातचीत जैसा लगता है जिसने बहुत कुछ देखा है, थोड़ा निर्णय लिया है और बहुत कुछ समझा है।

वह शिक्षा सुधार पर सार्वजनिक प्रवचन में भी सक्रिय रहे हैं, तथा पाठ्यक्रम डिजाइन, शिक्षक कल्याण और भारतीय उच्च शिक्षा की दिशा के बारे में बहस करने के लिए अपनी विश्वसनीयता और अनुभव प्रदान कर रहे हैं। ऐसा वे महत्वाकांक्षा से नहीं, बल्कि कर्तव्य की भावना से करते हैं जिसे सेवानिवृत्ति समाप्त नहीं कर सकती।

संस्था से परे जीवन:

जो लोग जानते हैं डॉ। गर्ग को अपने निजी जीवन में एक ऐसे व्यक्ति का सामना करना पड़ता है जो भ्रामक रूप से सरल सुख प्राप्त करता है। वह एक उत्सुक पाठक हैं, तथा इतिहास और दर्शन के प्रति विशेष रुचि रखते हैं। वह प्रतिदिन चलता है — एक अनुशासन जो दशकों से कायम रहता है — और उस लय में निरंतर चिंतन के लिए एक स्थान पाता है जिसकी मांग उसके लेखन में होती है। वह एक समर्पित पारिवारिक व्यक्ति हैं, और जिन लोगों ने उन्हें अपने पोते-पोतियों के साथ देखा है, वे कहते हैं कि उनके सामने मौजूद छोटे व्यक्ति में वही गर्मजोशी, धैर्य और सच्ची रुचि थी, जो उनके विद्यार्थियों को प्राप्त हुई थी

वह अपने समय के साथ उदारता से पेश आता है, जिससे उसे काफी नुकसान होता है। युवा शिक्षाविद उनसे सलाह मांगते हैं; वह बिना किसी संकोच या पुरानी यादों के इसे स्वतंत्र रूप से देते हैं। वह अतीत के लिए तरसता नहीं है या वर्तमान को अपमानित नहीं करता है - यह वास्तविक ज्ञान का एक चिह्न है जो दिखने से भी अधिक दुर्लभ है।

निवृत्ति ने मुझे वह सब कुछ पढ़ने का समय दिया है जो मैंने खुद से वादा किया था, और यह महसूस करने का कि अभी भी कितने सारे वादे बाकी हैं। एक शिक्षक की विरासत को मापना अत्यंत कठिन है। यह त्रैमासिक रिपोर्ट या राजस्व आंकड़ों में दिखाई नहीं देता है। यह धीरे-धीरे और अक्सर अदृश्य रूप से, पूर्व छात्रों द्वारा कक्षा छोड़ने के दशकों बाद किए गए विकल्पों में प्रकट होता है — डॉक्टर जो अपने मरीजों के साथ करुणा का व्यवहार करता है, इंजीनियर जो कोनों को काटने से इनकार करता है, साधारण नागरिक जो सोच समझकर वोट देता है और निष्पक्ष तर्क करता है। ये अच्छी शिक्षा के फल हैं, और ये डॉ. विजय गर्ग का सच्चा अभिलेखागार। हाल के वर्षों में उनका सम्मान करने के लिए एकत्रित पूर्व छात्र विशिष्ट क्षणों की बात करते थे - उन्होंने कहा था कि एक वाक्य ने उनके पाठ्यक्रम को बदल दिया, एक पुस्तक जो उन्होंने उनके हाथों में डाल दी थी, एक असफलता जिसे उन्होंने आवश्यक शिक्षा के रूप में पुनः प्रस्तुत किया था। इन यादों की विशिष्टता बहुत कुछ कहती है। वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो छात्रों को अपने नियंत्रण में रखकर उन्हें अपरिवर्तित छोड़ देता। वह, एक ऐसा शब्द उधार लेने के लिए जिसे वह स्वयं संभवतः स्वीकार करेंगे, रचनात्मक था k/p

यह कोई संयोग नहीं है कि उनके कई पूर्व छात्र स्वयं शिक्षण, चिकित्सा, कानून और सार्वजनिक सेवा में प्रवेश कर चुके हैं। यह एक ऐसे व्यक्ति की प्रतिध्वनि है जो अपने जीवन के हर व्यावहारिक कार्य में मानता था कि शिक्षित होना स्वयं से बड़ी किसी चीज़ में भाग लेना है डॉ। विजय गर्ग अपने सेवानिवृत्ति के समय को एक ऐसे व्यक्ति के आत्मविश्वास के साथ जीते हैं जो अपने उद्देश्य से संतुष्ट है। उन्होंने अपनी कलम नहीं रखी, न ही अपनी जिज्ञासा को शांत किया, और न ही युवाओं और संघर्षरत लोगों की परवाह करना बंद किया। उसने बस उस कमरे को बदल दिया है जिसमें वह यह काम करता है। और काम, जैसा कि हमेशा था, जारी है।

भारत ने कई स्कूलों और कॉलेजों के प्रशासक पैदा किये हैं। यह कम ही बार ऐसे शिक्षकों का निर्माण करता है जो स्कूल के बारे में विचार को बदल देते हैं। डॉ। विजय गर्ग इस दुर्लभ कंपनी से संबंधित है और देश, जिस तरह से यह पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता है, काफी बेहतर है

चक्रधरपुर रेल डिवीजन में ट्रेनों की लेट लतीफी पर कोल्हान रक्षा संघ गंभीर

जमशेदपुर में धरने पर बैठे लोग, चक्रधरपुर में आन्दोलन की तैयारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, समुचा सिंहभूम का सबसे बड़ा आदिवासी मूलवासियों का संगठन कोल्हान रक्षा संघ इलाके में ट्रेनो.की आवाजाही में लेट लतीफी को पर अपना तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त किया है। संघ के अध्यक्ष डीबार जोंकों एवं सचिव मानसिंह हेंब्रम के साथ सदस्य रविंद्र मंडल ने कहा है रेल मंत्रालय को डीआरएम हुरिया के कार्यशैली पर जांच कर दंड दिया जाना चाहिए। उन्होने कहा है यह सारंडा की धरती है जो लौह, मैंगनीज अयस्क प्रतिदिन सैकड़ों टन देता जिससे रेल अपना मुनाफा कमा रहा है। पर जिनके धरती से ये 'ओर' जा रहा है उनको रेल क्या देता है ? आज स्थिति बेहद खराब है। इस मंडल में राउरकेला से टाटा पहुंचने हेतु एक एक्सप्रेस को पांच से छह सात घंटे लग जा रहे हैं। डीआर एम हुरिया एवं उनके अधिनस्थों का यह कारनामा है। कोरोना के पहले ट्रेनें महज तीन घंटे में यह दुरी तय किया करते थे।

एक ही डिवीजन में कई जनप्रतिनिधि होने के बावजूद स्थानीय समस्याओं के समाधान में अपेक्षित गति नहीं दिख रही है, जिससे आम लोगों में नाराजगी बढ़ती जा रही है।

उधर चक्रधरपुर डीविजन के रेल की परिचालन पर उत्पन्न समस्या को लेकर स्टेशन आज टाटा रेलवे स्टेशन पर बड़ी संख्या में लोग धरना-प्रदर्शन में बैठे नजर आए। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि जहां एक ओर जमशेदपुर में लगातार आवाज उठ रही है, वहीं चक्रधरपुर क्षेत्र की समस्याओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

धरने में शामिल लोगों ने खास तौर पर ट्रेनों की लेटलतीफी को लेकर नाराजगी जताई। उनका कहना है कि लेट चल रही ट्रेनों की गतिविधि पर रोक लगाने और समयबद्ध संचालन सुनिश्चित करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं, जिससे यात्रियों को प्रतिदिन भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

वहीं, लोगों का यह भी आरोप है कि चक्रधरपुर के डीआरएम द्वारा इन समस्याओं पर कोई प्रभावी सुनवाई नहीं की जा रही है। आम यात्रियों की शिकायतें लगातार अनदेखी का शिकार हो रही हैं, जबकि दूसरी ओर मालगाड़ियों का परिचालन समयबद्ध तरीके से सुचारू रूप से किया जा रहा है। इस असंतुलन को लेकर लोगों में आक्रोश और भी बढ़ता जा रहा है।

चक्रधरपुर में भी धरना-प्रदर्शन की चर्चा जोर पकड़ रही है। सामाजिक संगठनों और स्थानीय नेताओं के बीच इस बात को लेकर मंथन जारी है कि आखिर कब तक इन समस्याओं को नजरअंदाज किया जाएगा। रेल सुविधाओं की कमी, यात्रियों की दिक्कतें और क्षेत्रीय विकास के मुद्दों को लेकर असंतोष लगातार बढ़ रहा है।

सूत्रों के अनुसार, जल्द ही चक्रधरपुर में भी एक बड़े आंदोलन की रूपरेखा तैयार की जा सकती है, जिसमें जनप्रतिनिधियों से जवाबदेही तय करने की मांग उठेगी।

प्रचार के दरम्यान झारखंड के मुख्यमंत्री ने कामाख्या मंदिर में की पूजा-अर्चना

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, असम में प्रचार के दौरे पर गये मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन आज असम के गुवाहाटी स्थित मां कामाख्या मंदिर में पूजा-अर्चना कर समस्त झारखंड वासियों की सुख, समृद्धि, शांति, उन्नति एवं उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर मंदिर के पुजारियों ने पूरे विधि-विधान एवं वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूजा संपन्न कराई। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने माता रानी के चरणों में शीश झुकाकर नमन करते हुए राज्य के सर्वांगीण विकास एवं जनकल्याण की प्रार्थना की। इस मौके पर मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि एक बार पुनः मुझे माता रानी के दरबार में आने का अवसर प्राप्त हुआ है। मां कामाख्या की कृपा से झारखंड निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो यही मेरी कामना है।

उत्कलीय कला होने के कारण झारखंड का वैश्विक धरोहर सरायकेला छऊ उपेक्षित ?

सरायकेला छऊ कला केंद्र में सभी पद खाली, डीसी का मासिक प्रेस कॉन्फ्रेंस बंद !!

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

सरायकेला, सरायकेला खरसावां जिले में उसकी विश्व प्रसिद्ध कला सरायकेला छऊ नृत्य आज मरने के कागार पर पहुंच चुका है। सच पुछिए तो विगत 2022 से सरकार इस उत्कलीय कला को एक निदेशक तक दे नहीं पाई है जहां आज सभी पद खाली है। उससे पहले एक क्लर्क को इस महत्वपूर्ण पद पर अधिकारियों द्वारा बैठाकर तीन दशक तक खींचा जाना आज भी जांच के दायरे में है। जो बेहद शर्मनाक है बिहार व झारखंड की कार्मिक प्रशासनिक विभाग के लिए, कारण यह एक रियासत की प्रापर्टी व उसकी वैश्विक धरोहर जो ठहरा। अगर हम आजाद मुल्क के आई गयी सरकारें एवं राजनीति को देखें तो हर किसी के पार्टी की सरकार की नियत रही है -ओडिया को तहस नहस कर समाप्त करो फिर .... । आज सरकारी कला केंद्र में लगभग सभी पदों पर कर्मी रिटायर्ड हो चुके हैं जहां बहाल करने के बजाय इस ओडिया संस्कृति को रसातल में ले जाने का सिलसिला जारी है। 1960-61मे बिहार सरकार ने इस ओडिया कला को समाप्त करने हेतु बड़ा षड्यंत्रकारी कदम उठाया था और छऊ का सरकारी कला केंद्र खोले दिया जो उसके जन्म स्थान राजमहल की वैश्विक प्रसिद्धि को समाप्त करना ही मुख्य उद्देश्य था। जहां निदेशक, वरीय अनुदेशक, वासुरी बादक, ढोल बादक, माली सह चौकीदार का पद श्रृजित किया गया। इसके अलावा लिपिक आदि का पद भी था जिसको सरायकेला सरकारी छऊ केंद्र ने कभी देखा ही नहीं। कुछ ऐसे हैं सरायकेला विश्वप्रसिद्ध छऊ का वर्तमान स्थिति। कारण यहां हर पल पर ओड़िआ लोग होते थे।

सरायकेला खरसावां भारत में एक मात्र ऐसा जिला है जिसका विधिवत (दोनों देशी रियासतों का) विलय भारतीय अधिराज्य में 1947 को सरदार पटेल के समक्ष

होने के बाद ओडिशा का एक राजस्व जिला बनाया जाता है ताकि उसकी भाषा, संस्कृति महफूज रह सके। पर कुछ दिन के बाद यह घृणित राजनीति का शिकार हो जाता है। फिर एन केन प्रकारेण इसे बिहार में लाकर उसकी भाषा संस्कृति आदि को तहस नहस का जो खेल खेला गया विगत पच्चीस वर्षों से झारखंड में भी थमने का नाम नहीं ले रहा है। नतीजा आज एक भी पदधारी नहीं है इस वैश्विक धरोहर को संवारने हेतु। खाली पड़ा है संस्थान। इस कला

जिसकी भाषा एवं संस्कृति, साहित्य आदि ओड़िया रहा। भरत मुनि के नाट्य शास्त्र से आया तत्व इसमें समाहित है।

इसे संरक्षण देने हेतु केंद्र सरकार का साफ निर्देश रहते इसे खत्म किया जा रहा है। आज जिला प्रशासन जिसके पदेन अध्यक्ष स्वयं उपायुक्त होते कार्यक्रम का बैठक कर मिडिया को प्रेस रिलीज वाड्र्सएप पर भेज दिया दिया जाता पर कभी भी सामने आकर प्रेस कॉन्फ्रेंस नहीं करना उस आदेश के मर्यादा का सरासर उलंघन है जो केंद्र का राज्य को निर्देशित है। सरायकेला जहां हर ओड़िआ एक उम्दा कलाकार होता है किसी ना किसी क्षेत्र में वह ठगा महसुस कर रहा है आज। भाषा, संस्कृति रोजी, रोजगार को लेकर कुछ ज्यादा ही।

सच पुछिए तो जमीन, कला, संस्कृति जिसकी रही आज उनकी कोई पुछ ही नहीं सरायकेला में।

ऐसे संवेदनशील प्रसंग पर उपायुक्त सरायकेला का प्रेस कॉन्फ्रेंस नहीं करना उस मार्जार एग्रीमेंट को भी चुनौती देता जो भारतीय अधिराज्य मे विलय के साथ हुए निर्देशित है। कभी एकीकृत सिंहभूम, फिर 1990 से पश्चिमी सिंहभूम के पूर्व उपायुक्तों के जरिए सबकुछ ठीक ठाक था ओडिया भाषा कला संस्कृति के मर्मज्ञ, फरिखंडा आदि मार्शल आट्र्स के विशारदों, ढोल नगाड़े, शहनाई वादन, मुखौटे के जानकार प्रेस से मुखातिब होते थे पर आज वैसा नहीं है। हां प्रथम उपायुक्त बंदना डाडेल हर महिने प्रेस कॉन्फ्रेंस किया करती थी और जानकार पत्रकारों को इज्जत के साथ कनेक्ट करती थी पर अब सबकुछ बंद है।

इस देशी रियासत विलय के बाद कभी केंद्र तो ओडिशा फिर बिहार अब झारखंड मे अपना सबकुछ खत्म होने चला है।

(8 अप्रेल 1929 के संदर्भ में)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण दिन - 8 अप्रैल 1929

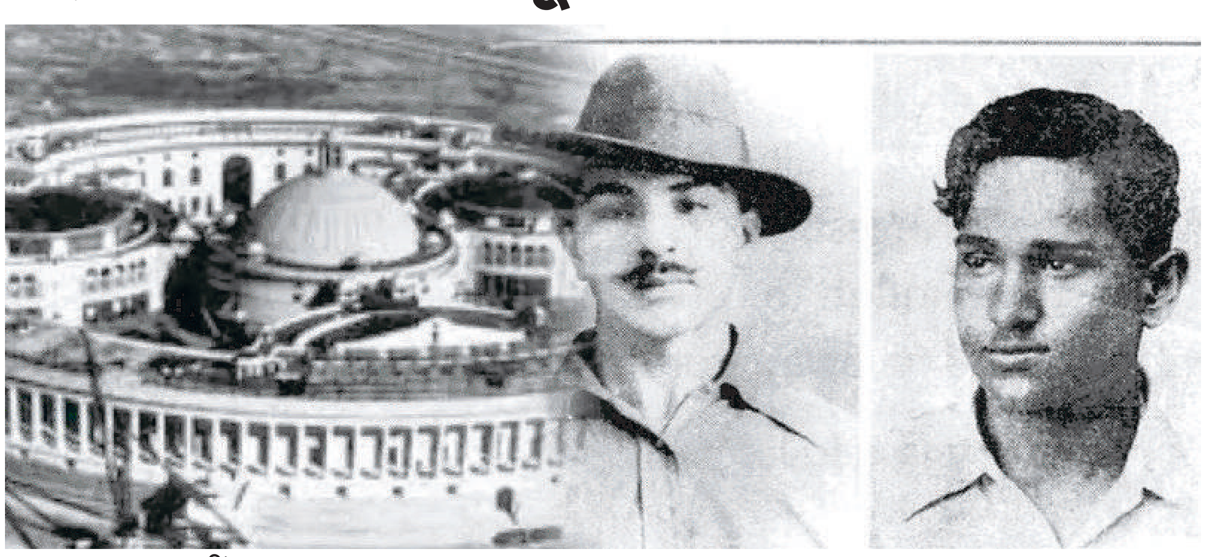

सरदूल सिंह

8 अप्रैल 1929 भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतीकात्मक दिन है। इस दिन भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की केंद्रीय विधानसभा (असेंबली) में बम फेंककर औपनिवेशिक शासन के खिलाफ एक ऐसा राजनीतिक संदेश दिया जिसकी गूंज आज भी सुनाई देती है। यह घटना किसी हिंसक विद्रोह का नहीं, बल्कि एक सुनियोजित वैचारिक हस्तक्षेप का उदाहरण थी, जिसका उद्देश्य था— भारतीय बहरों को सुनाना और उन्हें नींद से जगाना ताकि वे समाजवाद के लिए तैयार हों।

इस ऐतिहासिक घटना को समझने के लिए उसके पीछे की राजनीतिक और वैचारिक पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक है। उस समय ब्रिटिश सरकार भारत में दमनकारी कानूनों के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को कुचलने का प्रयास कर रही थी। "पब्लिक सेफ्टी बिल" (सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक) और "ट्रेड डिस्प्यूट एक्ट" जैसे कानूनों का उद्देश्य था— एक ओर राजनीतिक आंदोलनों को दबाना और दूसरी ओर मजदूर वर्ग के अधिकारों को सीमित करना। इन कानूनों के माध्यम से अंग्रेजी सत्ता यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि भारत की जनता संगठित होकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष न कर सके।

इन परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के क्रांतिकारियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि अब केवल गुप्त क्रांतिकारी गतिविधियों से काम नहीं चलेगा, बल्कि जनता को सीधे तौर पर जागरूक करना आवश्यक है। भगत सिंह और उनके साथियों ने गहन अध्ययन, बहस और आत्ममंथन के बाद यह समझा कि "बम और पिस्तौल" क्रांति के साधन नहीं, बल्कि केवल प्रतीक हो सकते हैं। असली क्रांति तो विचारों की ताकत से ही आती है।

इसी सोच के तहत उन्होंने 8 अप्रैल 1929 को असेंबली में बम फेंकने की योजना बनाई। इस योजना की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि बम में किसी प्रकार के छर्रे नहीं डाले गए थे, ताकि किसी व्यक्ति को हानि न पहुंचे। यह केवल एक प्रतीकात्मक धमाका था, जिसका उद्देश्य था—जनता और शासकों का ध्यान आकर्षित करना। बम फेंकने के बाद भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने भागने की बजाय स्वयं को गिरफ्तार कराया, ताकि अदालत को एक मंच के रूप में इस्तेमाल कर अपने विचारों का प्रचार-प्रसार किया जा सके।

असेंबली में फेंके गए पर्चों में, जिन्हें भगत सिंह ने 'बलराज' के नाम से जारी किया था, स्पष्ट रूप से लिखा गया था कि यह कदम मानव जीवन को नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं, बल्कि अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए उठाया गया है। उन्होंने कहा कि "हम मनुष्य के जीवन को पवित्र समझते हैं" और हमारा उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है, जिसमें सभी को स्वतंत्रता, समानता और सम्मान मिले।

भगत सिंह का दृष्टिकोण केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था। वे एक व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के पक्षधर थे। उनका मानना था कि केवल अंग्रेजों को हटाकर अगर उसी पूंजीवादी और शोषणकारी व्यवस्था को बनाए रखा जाए, तो आम जनता की स्थिति में कोई वास्तविक सुधार नहीं होगा। इसलिए वे समाजवाद की स्थापना के पक्ष में थे—एक ऐसी व्यवस्था, जिसमें उत्पादन के साधनों पर समाज का सामूहिक अधिकार हो और प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार काम तथा उसके श्रम के अनुसार उचित पारिश्रमिक मिले।

अपने वैचारिक विकास के दौरान भगत सिंह ने विश्व इतिहास, दर्शन और अर्थशास्त्र का गहन अध्ययन किया। उन्होंने कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स और व्लादिमीर लेनिन जैसे महान विचारकों के सिद्धांतों का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि समाज में व्याप्त असमानता और शोषण का मूल कारण पूंजीवादी व्यवस्था है। इसीलिए वे एक समाजवादी क्रांति के माध्यम से एक समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे।

"बहरों को सुनाने" का उनका संदेश केवल अंग्रेजी हुकूमत के लिए नहीं था, बल्कि उससे कहीं अधिक भारतीय समाज के लिए था— विशेषकर उन वर्गों के लिए, जो या तो शोषण को समझ नहीं पा रहे थे या केवल सुधारों के माध्यम से बदलाव की आशा कर रहे थे। भगत सिंह चाहते थे कि देश की जनता, विशेषकर युवा, किसान और मजदूर, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हों और संगठित होकर एक नए समाज के निर्माण में भाग लें।

आज, लगभग एक सदी बाद, जब हम इस घटना को देखते हैं, तो पाते हैं कि भगत सिंह का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है। वर्तमान समय में बढ़ती आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, और सामाजिक विषमता यह दर्शाती है कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है। जब तक समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर और सम्मान नहीं मिलता, तब तक स्वतंत्रता अधूरी है।

आज के युवाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती है—अपने अधिकारों को समझना और उनके लिए संगठित रूप से संघर्ष करना। "योग्यता अनुसार काम और काम के अनुसार दाम" का सिद्धांत केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक न्यायपूर्ण समाज की आधारशिला है। यदि इस विचार को व्यापक स्तर पर अपनाया जाए, तो न केवल बेरोजगारी और गरीबी जैसी समस्याओं का समाधान संभव है, बल्कि एक समतामूलक और मानवीय समाज का निर्माण भी किया जा सकता है।

अंततः, भगत सिंह का जीवन और उनका बलिदान हमें यह सिखाता है कि क्रांति केवल हथियारों से नहीं, बल्कि विचारों, संगठन और जनचेतना से आती है। उनका यह संदेश आज भी हमें प्रेरित करता है कि हम अन्याय के खिलाफ आवाज उठाएं, समाज में व्याप्त असमानताओं को समझें और एक बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए सक्रिय रूप से प्रयास करें।

ग्रेटर कैलाश में हिट एंड रन मामले का खुलासा, 19 वर्षीय चालक और उसकी मां पर केस दर्ज

बाइक सवार की मौत के बाद फरार हुई मारुति सियाज बरामद

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: दक्षिण जिला पुलिस ने ग्रेटर कैलाश-1 में हुए एक दर्दनाक सड़क हादसे का खुलासा करते हुए कार चालक और वाहन मालिक के खिलाफ मामला दर्ज किया है। इस हादसे में एक बाइक सवार की मौत हो गई थी। जांच के दौरान पुलिस ने दुर्घटना में शामिल कार को बरामद कर लिया और चालक की पहचान 19 वर्षीय युवक के रूप में की है। साथ ही उसकी मां, जो वाहन की पंजीकृत मालिक है, को भी सबूत छिपाने और वाहन को मरम्मत कराने की कोशिश के आरोप में आरोपी बनाया गया है।

पुलिस के अनुसार 31 मार्च 2026 को ग्रेटर कैलाश-1 थाना में एक पीसीआर कॉल प्राप्त हुई थी। कॉल में बताया गया कि ग्रेटर कैलाश-1 स्थित बी-234 के सामने एक सड़क हादसा हुआ है, जिसमें एक सिल्वर रंग की मारुति सियाज कार ने मोटरसाइकिल सवार को टक्कर मार दी और मौके से फरार हो गई।

हादसे में घायल व्यक्ति की पहचान सुरेंद्र दास के रूप में हुई। वह 41 वर्ष के थे और घरेलू सहायक के रूप में खाना बनाने का काम करते थे। हादसे के तुरंत बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया, लेकिन नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट में डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तुरंत एफआईआर संख्या 70/2026 दर्ज कर जांच शुरू कर दी। जांच के दौरान पुलिस ने घटनास्थल और आसपास के सभी संभावित मार्गों के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली। इसके अलावा परिवहन विभाग से संदिग्ध वाहनों की जानकारी प्राप्त की गई और कई कारों की मौके पर जाकर जांच की गई। पुलिस ने वाहन मालिकों को थाने बुलाकर पूछताछ भी की।

लंबी जांच के बाद पुलिस ने दुर्घटना में इस्तेमाल हुई कार की पहचान Maruti Ciaz के रूप में की। कार को दुर्घटनाग्रस्त हालत में बरामद कर लिया गया और उसे मालखाने में जमा करा दिया गया। जांच में सामने आया कि हादसे के समय कार चला रहा युवक रूहान चड्ढा था, जिसकी उम्र 19 वर्ष है। उसने पूछताछ में स्वीकार किया कि हादसे के बाद वह घबरा गया था और तेजी व लापरवाही से वाहन चलाते हुए दुर्घटना हो गई।

पुलिस जांच में यह भी पता चला कि हादसे के बाद कार को छिपाने की कोशिश की गई और उसे मरम्मत कराने का प्रयास भी किया गया, ताकि पुलिस तक सबूत न पहुंच सकें। वाहन की पंजीकृत मालिक और रूहान की मां निहारिका चड्ढा पर भी मामला दर्ज किया गया है। पुलिस का आरोप है कि उन्हें हादसे की जानकारी थी, इसके बावजूद उन्होंने चालक को सामने नहीं आने दिया और वाहन को छिपाने में मदद की। पुलिस ने निहारिका चड्ढा के खिलाफ सबूत छिपाने, वाहन की मरम्मत कराने की कोशिश और आरोपी को शरण देने की धाराएं भी लगाई हैं। दक्षिण जिला पुलिस के अनुसार मामले की जांच अब अंतिम चरण में है और जल्द ही आरोपपत्र दाखिल किया जाएगा।

हैदराबाद में सिरवी करियर काउंसलिंग सफलतापूर्वक आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

हैदराबाद पारसीगुटा स्थित आईमाता जी मंदिर बडेर में सर्वप्रथम आईमाता जी की पुजा - अर्चना कर कार्यक्रम शुरू किया। जारी प्रेस विज्ञप्ति सुरेश सैणचा ने बताया कि सीरवी फ्रेंड्स क्लब द्वारा बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए पारसीगुट्टा बडेर, सिकंदराबाद में करियर काउंसलिंग कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम पारसीगुट्टा बडेर सिकंदराबाद कमेटी के सहयोग से संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवी काउंसलर्स ने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान किया। सिविल सर्विसेज से सुनील सोलंकी (IAS गुजरात), इंजीनियरिंग क्षेत्र से हरीश (DRDO) एवं सुरेंद्र, आर्मी से मेजर निखिल एवं कैप्टन दीपक चौयल, काउंसलिंग विशेषज्ञ अनीता, चार्टर्ड अकाउंटेंट क्षेत्र से जगदीश, अशोक, नेमिचंद, ममता, पुरब, मेडिकल क्षेत्र से डॉ. ललिता, डॉ. प्रदीप, डॉ. बसंती, डॉ. ज्योति, डॉ. हिमांशु, डॉ. प्रतिभा, (income tax officer) से अजय शर्मा, कंपनी सेक्रेटरी से छगन, आर्किटेक्ट से भरत, भाविन, एडवोकेट से भावना, इंटीरियर डिजाइनर से दिनेश, खुशबू, कमर्शियल पायलट से नरेश, प्रवीण तथा फैशन डिजाइनर दीक्षा सोलंकी सहित अन्य विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को सही दिशा में मार्गदर्शन दिया।

कार्यक्रम के दौरान काउंसलर अनिता द्वारा PPT के माध्यम से बच्चों को सही मार्गदर्शन देने का प्रयास किया गया, जिसमें करियर चयन, अवसरों एवं भविष्य की दिशा के बारे में विस्तार से समझाया गया। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने प्रश्नों के समाधान प्राप्त किए।

अंत में, सीरवी फ्रेंड्स क्लब ने समस्त काउंसलर्स, पारसीगुट्टा बडेर कमेटी एवं सहयोग करने वाले सभी समाजबंधुओं का हृदय से आभार व्यक्त किया। मंच संचालन सुरेश सैणचा व सुनिल चोयल ने किया। सीरवी फ्रेंड्स क्लब के सुरेश सैणचा ने धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यक्रम का समापन किया।

रसोई गैस की कालाबाजारी: 161 गैस सिलेंडर जब्त, राउरकेला आपूर्ति विभाग की कार्रवाई

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला, 7 अप्रैल: ईरान के खिलाफ अमेरिका और इज़राइल के बीच युद्ध शुरू होने और इसके बाद पूरे मध्य पूर्व में तनाव बढ़ने के कारण एलपीजी गैस और तेल संकट की स्थिति बनी हुई है। हालांकि, ईरान द्वारा भारतीय तेल और एलपीजी से भरे जहाजों को अनुमति देने के चलते भारत सरकार ने देश में एलपीजी की कमी न होने का आश्वासन दिया है। इसके बावजूद कुछ डिस्ट्रीब्यूटर और डीलर मुनाफाखोरी के लिए गैस का भंडारण कर रहे हैं।जिसमे विश्वस्त सूत्रों के अनुसार बसंती कॉलोनी, पावर हॉउस,वेदव्यास, कलूंगा, आईडीसी,छेंड, पानपोष इत्यादि क्षेत्रों में कालाबाजारी जोरों पर है व विशेषरूप से कमर्रशियल साइलेंडरों के लिए वेदव्यास आईडीसी, टीसीआई कारण स्क्रैप व्यवसाईयों को लगातार आपूर्ति की जा रही है जबकी घरों व रेस्टरों में गैस सिलेंडर की भारी किल्ल्त है l

इसी क्रम में आज राउरकेला के सेक्टर-7 थाना क्षेत्र अंतर्गत सेक्टर-9 के ई-ब्लॉक स्थित एक गैरेज में राउरकेला आपूर्ति विभाग और पुलिस की संयुक्त छापेमारी में 161 गैस सिलेंडर जब्त किए गए। इनमें 103 कमर्शियल और 58 घरेलू एलपीजी सिलेंडर शामिल हैं।

इस मामले में आपूर्ति विभाग के वरिष्ठ अधिकारी और पुलिस अधिकारी जांच कर रहे हैं। राउरकेला इस्पात संयंत्र के अधीन इस गैरेज में अवैध रूप से गैस सिलेंडर किसने जमा किए थे और किसके नेतृत्व में यह कालाबाजारी चल रही थी, इसकी जांच जारी है। साथ ही यह भी पता लगाया जा रहा है कि गैरेज किसने किराए पर लिया था।

एक तरफ शहर में गैस सिलेंडरों की भारी कमी है, वहीं दूसरी ओर कुछ अवैध कारोबारी कालाबाजारी के लिए गैरेज में सिलेंडर छिपाकर रख रहे थे। इस बड़ी कार्रवाई से कालाबाजारी करने वालों में भय का माहौल बन गया है। पुलिस भी पूरे मामले की जांच में जुटी हुई है और आपूर्ति विभाग के अधिकारी मजिस्ट्रेट की उपस्थिति में जांच कर रहे हैं।

आईएमए कैमूर शाखा द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया

कैमूर

आज विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर आईएमए कैमूर शाखा द्वारा रामगढ़ प्रखंड के डरवन मध्य विद्यालय में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। सबसे पहले चिकित्सकों स्कूली छात्र छात्राओं द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता नारे के साथ जागरूकता रैली मध्य विद्यालय डरवन से डरवन गांव में निकाली गई। जागरूकता रैली के बाद ग्रामीणों एवं स्कूली छात्र छात्राओं को आईएमए के निवर्तमान प्रदेश सचिव एवं आईएमए एमएसएन के प्रदेश चेयरमेन डॉ संतोष कुमार सिंह ने सम्बोधित किया। अच्छा स्वास्थ्य ही सच्ची संपत्ति है जिसे हमें सहेज कर रखना चाहिए। स्वस्थ समाज ही एक मज़बूत और विकसित राष्ट्र की पहचान है। लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए हर साल पूरे विश्व में 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। हर साल इसका एक विशेष थीम होता है। यह दिन हमें स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करता है। इस साल विश्व स्वास्थ्य दिवस की आधिकारिक थीम है - स्वास्थ्य के लिए एकजुट, विज्ञान के साथ खड़े रहें।

इस वर्ष की थीम जो वैज्ञानिक साक्ष्यों पर आधारित स्वास्थ्य सेवाओं पर केंद्रित है, हमे याद दिलाती है कि अफ़वाहों के दौर में सही जानकारी ही सबसे बड़ा जीवन रक्षक है। ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं एवं तकनीकों को पहुंचाने, स्वास्थ्य के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु आईएमए ' आओ गांव चलें' अभियान के अंतर्गत कार्य करा रहा है। आज के समय में गांव का एक व्यक्ति वीडियो कॉल के माध्यम से शहर के विशेषज्ञ डॉक्टर से सलाह ले सकता है। यह विज्ञान और तकनीक का स्वास्थ्य में समन्वय है। ग्रामीण अपनी जीवन शैली में वैज्ञानिक आदतों जैसे स्वच्छता, संतुलित पोषण और समय पर जॉच को शामिल करें। यदि हम आज विज्ञान के साथ खड़े होते हैं तो आनेवाली पीढ़ियों को अधिक सुरक्षित एवं स्वस्थ भविष्य दे पाएंगे।

जागरूकता कार्यक्रम में शामिल अन्य में बीडीसी फिरोज अंसारी, प्रधानाचार्य महेंद्र सिंह, शिक्षक जयविंद सिंह, प्रह्लाद सिंह, लक्ष्मण प्रसाद, सुमन देवी, वंदना पटेल के साथ विद्यालय के सैकड़ों छात्र छात्राओं ने भाग लिया।

रिपोटर संतोष कुमार चतुर्वेदी

उत्क्रमित मध्य विद्यालय, हरनाथपुर कैमूर बिहार में 'स्कूल चलो' जागरूकता रैली का भव्य आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

दिनांकः 07 अप्रैल 2026

स्थानः हरनाथपुर, मोहनियां प्रखंड, कैमूर (बिहार)

हरनाथपुरः ₹एक भी बच्चा छूटा, संकल्प हमारा टूटा₹ के नारों से बच्चों ने जगाई शिक्षा की अलख

मोहनियां, कैमूर (संवाददाता): ग्रामीण क्षेत्रों में शत-प्रतिशत शिक्षा सुनिश्चित करने और नामांकन दर बढ़ाने के उद्देश्य से आज, कैमूर जिले के मोहनियां प्रखंड अंतर्गत उत्क्रमित मध्य विद्यालय, हरनाथपुर द्वारा एक भव्य 'शिक्षा जागरूकता रैली' का आयोजन किया गया। रैली का नेतृत्व विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री अवधेश कुमार सिंह ने किया, जिसमें विद्यालय के सभी शिक्षक और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

नारों से गुंजायमान हुआ गांवः

हाथों में स्लोगन लिखी तख्तियां लिए बच्चों ने पूरे गांव का भ्रमण किया और बुलंद आवाज में नारे लगाकर ग्रामीणों का ध्यान खींचा। रैली के दौरान बच्चों ने ₹एक भी बच्चा छूटा, संकल्प हमारा टूटा₹, ₹आधी रोटी खाएंगे, स्कूल हम जाएंगे₹ और ₹अच्छे बच्चे तभी बनेंगे, जब हम स्कूल चलेंगे₹ जैसे प्रेरक नारे लगाए। इन नारों के माध्यम से बच्चों ने यह संदेश दिया कि शिक्षा ही उज्ज्वल भविष्य का एकमात्र आधार है।

शिक्षकों की सक्रिय भूमिकाः

इस जागरूकता अभियान में विद्यालय के सभी शिक्षकों ने घर-घर जाकर संपर्क किया और शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाई। रैली के सफल आयोजन में प्रमुख रूप से कुमारी श्यामदुलारी, बिजेन्द्र कुमार, आकांक्षा जायसवाल, पूर्णिमा सिंह, मोहम्मद गुलाम रसूल, मनोज कुमार सिंह और सुमित कुमार ने सक्रिय भूमिका निभाई और बच्चों का मार्गदर्शन किया।

अभिभावकों से सीधा संवादः

रैली के दौरान प्रधानाध्यापक श्री अवधेश कुमार सिंह ने अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि सत्र 2026-27 के लिए नामांकन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। उन्होंने सरकारी योजनाओं जैसे निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकें, पोशाक राशि और पौष्टिक मिड-डे मील की जानकारी देते हुए अपील की कि वे अपने बच्चों को नियमित विद्यालय भेजें। गांव के बुजुर्गों और युवाओं ने बच्चों के इस सराहनीय प्रयास का स्वागत किया और शिक्षा के इस महाअभियान में सहयोग देने का भरोसा दिलाया।

रिपोर्टरः संतोष कुमार चतुर्वेदी

राष्ट्रपति दो दिन के ओडिशा दौरे पर आएंगे, नए पुलिस जिले का उद्घाटन करेंगे और 'प्रेसिडेंट्स पुलिस कॉलर' देंगे

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 21 तारीख को ओडिशा आएंगे। पता चला है कि राष्ट्रपति झारसुगुड़ा और रायरंगपुर में दो प्रोग्राम में शामिल होंगे। राष्ट्रपति ओडिशा पुलिस के प्रस्तावित रायरंगपुर पुलिस जिले का उद्घाटन करेंगे और SP ऑफिस का उद्घाटन करेंगे। इसी तरह, ओडिशा पुलिस को नया मिला 'प्रेसिडेंट्स पुलिस कॉलर' भी दिया जाना है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के दौरे को लेकर पुलिस DG की अध्यक्षता में एक मीटिंग हुई। मीटिंग में पुलिस डिपार्टमेंट के कई सीनियर अधिकारी मौजूद थे। मीटिंग में DG क्राइम ब्रांच विनयतोष मिश्रा, ADG लॉ एंड ऑर्डर संजय कुमार, ADG मॉडर्नाइजेशन सौमेंद्र प्रियदर्शी, ADG कमिश्नर दयाल गंगवार, ADG पुलिस हाउसिंग कॉर्पोरेशन चेयरमैन, ADG एंटी नक्सल ऑपरेशन्स संजीव पांडा, ADG SAP राजेश कुमार, ADG ICAW एस सैनी, HRPC यतींद्र कोयल, पुलिस कमिश्नर देव दत्त सिंह, ADG हेडक्वार्टर प्रत्य मोहंती, IG प्रवीण कुमार, IG क्राइम ब्रांच सार्थक सदांगी शामिल हुए। गौरतलब है कि 1 तारीख को केंद्रीय गृह मंत्रालय ने ओडिशा पुलिस को 'प्रेसिडेंट पुलिस कॉलर' दिए जाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी थी।

वीर सपूत नायक गोवर्धन को सैनिक सम्मान के साथ अंतिम विदाई, पूरे क्षेत्र में उमड़ा जनसैलाब

अलवर (राजस्थान)

आज देश सेवा, त्याग और समर्पण की अमर गाथा लिखने वाले भारतीय सेना (2 गाड्र्स, 1 ग्रेनेडियर्स) के जांबाज़ वीर नायक (Nk) गोवर्धन को आज उनके पैतृक गांव दामोदर बास, जिला अलवर (राजस्थान) में पूरे सैन्य सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई। उनके आकस्मिक निधन से जहां पूरी पलटन शोक में डूबी है, वहीं पूरे क्षेत्र में गम और गर्व का अनोखा संगम देखने को मिला।

स्वर्गीय नायक गोवर्धन ने अपने जीवन के 19 वर्ष 8 महीने देश सेवा को समर्पित करते हुए, कर्तव्य पथ पर चलते-चलते अपने प्राणों की आहुति देकर मां भारती के चरणों में स्वयं को समर्पित कर दिया। उनका यह सर्वोच्च बलिदान सदैव आने वाली पीढ़ियों को देशभक्ति और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा देता रहेगा।

अंतिम संस्कार के दौरान आर्टिलरी रेजिमेंट की आई गार्ड द्वारा उन्हें सैन्य परंपराओं के अनुरूप गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इस दौरान सैनिकों एवं पूर्व सैनिकों ने हाथों में तिरंगा लहराते हुए “भारत माता की जय” और “वीर अमर रहें” के गगनभेदी नारों के बीच अपने वीर साथी को अंतिम सलामी दी। पूरा वातावरण देशभक्ति और भावनाओं से ओतप्रोत हो उठा।

इस अवसर पर यूनिट के बहादुर सैनिकों—सूबेदार धनीराम, सूबेदार राजेश मेहला, सूबेदार वीरेंद्र, नायब सूबेदार लालाराम, नायब सूबेदार परमवीर एवं हवलदार दीपक सहित अनेक जवानों ने नम आंखों से श्रद्धांजलि अर्पित की। वहीं बड़ी संख्या में पहुंचे भूतपूर्व सैनिकों एवं ग्रामीणों ने भी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हुए शोकाकुल परिवार को ढांढस बंधाया।

इस दुखद क्षण में गुरेज एक्स-सर्विसमैन वेलफेयर एसोसिएशन की एकजुटता और सेवा भावना विशेष रूप से देखने को मिली। एसोसिएशन के माध्यम से उपस्थित सैनिकों, पूर्व सैनिकों एवं गणमान्य व्यक्तियों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई, जिसे हवलदार वीर सिंह और हवलदार बलवंत ने पूरी जिम्मेदारी और समर्पण के साथ सफलतापूर्वक संपन्न किया।

गौरतलब है कि गुरेज एक्स-सर्विसमैन वेलफेयर एसोसिएशन न केवल अपने साथियों के सुख-दुख में सदैव साथ खड़ी रहती है, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का भी अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती है। एसोसिएशन के सदस्य अपनी पेंशन से स्वेच्छा से अंशदान कर एक सशक्त फंड तैयार करते हैं, जिसके माध्यम से—

- पूर्व सैनिकों की बेटियों के विवाह हेतु आर्थिक सहायता,
- वीर नारियों के परिवारों को विशेष सहयोग,
- नौकरी प्राप्त करने वाले बच्चों को प्रोत्साहन राशि,
- तथा शहीद साथियों के परिवारों को आर्थिक संबल प्रदान किया जाता है।

यह पहल देश में सैनिक एकता, भाईचारे और सेवा भाव का अनूठा उदाहरण बन चुकी है।

इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों ने एक स्वर में यह संकल्प लिया कि स्वर्गीय नायक गोवर्धन का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा, और उनके परिवार को हर संभव सहयोग प्रदान किया जाएगा।

अंत में सभी ने ईश्वर से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें तथा शोक संतप्त परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

ॐ शांति, ॐ शांति, ॐ शांति।

रिपोर्टरः
राजबीर मलिक
हवलदार (Retd.)
for Gurais Ex-Servicemen Welfare Association
(2 Guards, 1 Grenadiers)

जीईजी ग्लोबल फाउंडेशन का आयोजन “पर्यावरण संरक्षण में युवाओं की भूमिका” पर निबंध प्रतियोगिता

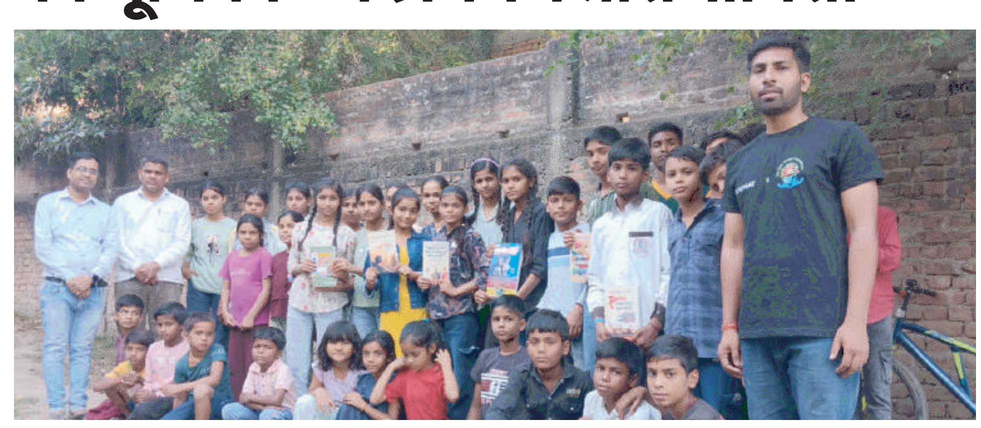

कैमूर, बिहार

जीईजी ग्लोबल फाउंडेशन के स्थापना सप्ताह के अंतर्गत बिहार अध्यक्ष शिवम कुमार के नेतृत्व में चैनपुर प्रखंड के हाटा में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में तिवई, सतौना, हाटा, सरैया, लोहदन, मदुरना, नन्दना, शाहपुर, मेढ़, तेनाउरा, नौउडीह सहित विभिन्न गांवों के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी सक्रिय सहभागिता दर्ज कराई। कार्यक्रम के दौरान निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय “पर्यावरण संरक्षण में युवाओं की भूमिका” रखा गया। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में प्रधानाध्यापक राजेश कुमार ने भूमिका निभाई।

प्रतियोगिता में जूनियर वर्ग में प्रथम स्थान हिमांशु जायसवाल, द्वितीय स्थान हर्षित कुमार एवं तृतीय स्थान रिया कुमारी ने प्राप्त किया। वहीं सीनियर वर्ग में प्रथम स्थान ब्यूटी यादव, द्वितीय स्थान राकेश यादव तथा तृतीय स्थान आयुषी जायसवाल रही। सभी विजेता प्रतिभागियों को बिहार अध्यक्ष शिवम कुमार, प्रधानाध्यापक राजेश कुमार एवं शिक्षक अरुण केसरी द्वारा सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर बिहार अध्यक्ष शिवम कुमार ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि आज हम इसके प्रति सजग नहीं हुए, तो आने वाली पीढ़ियों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने सभी से अपील की कि वे पर्यावरण संरक्षण को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं।

जीईजी ग्लोबल फाउंडेशन के स्थापना सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में लगातार जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण व समाज में सकारात्मक बदलाव लाना है।

संतोष कुमार चतुर्वेदी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023